



Spirit Flames Global

Daily News

"दिलों में जोश जगाना, राष्ट्रों का रूपांतरण करना और
यीशु मसीह के लिए दुनिया पर विजय प्राप्त करना"

- जीन मेजर द्वारा

महीने का मूल भावना



यूहन्ना 6:63

"आत्मा ही जीवन देती है; शरीर का कोई महत्व नहीं है। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं, वे आत्मा और जीवन से परिपूर्ण हैं।"

विषयसूची

सप्ताह 1

1 जून: आत्मा का महीना - यूहन्ना 6:63	3
2 जून: आत्मा, मन और शरीर - 1 थिस्सलनीकियों 5:23	4
3 जून: व्यक्ति का अदृश्य पक्ष - 2 कुरिन्थियों 4:18	5
4 जून: पुनर्जन्म - यूहन्ना 3:6	6
5 जून: अपनी मानवीय आत्मा के माध्यम से ईश्वर से जुड़ना - रोमियों 8:16	7
6 जून: पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन - रोमियों 8:14	8
7 जून: मनुष्य के हृदय में व्याप्त बुराई पर विजय प्राप्त करना - विर्मयाह 17:9	9

सप्ताह 2

8 जून: आध्यात्मिक बातें सीखना - 1 कुरिन्थियों 2:14	10
9 जून: आध्यात्मिक भजन गाना - इफिसियों 5:19	11
10 जून: आत्माओं का विवेक - 1 कुरिन्थियों 12:10	12
11 जून: आपकी मानवीय आत्मा को परमेश्वर की पवित्र आत्मा के साथ संगति की आवश्यकता है - 2 कुरिन्थियों 13:14	13
12 जून: उन पदार्थों से बचें जो आपकी आत्मा को नुकसान पहुंचाते हैं - 1 कुरिन्थियों 6:19	14
13 जून: परमेश्वर की पवित्र आत्मा के द्वारा विकास - 2 कुरिन्थियों 3:18	15
14 जून: परमेश्वर का प्रकाश - 1 यूहन्ना 1:5	16

सप्ताह 3

15 जून: पवित्र आत्मा के फल - गलातियों 5:22-23	17
16 जून: आत्मा के द्वारा प्रेम का अनुसरण करो - 1 कुरिन्थियों 14:1	18
17 जून: विश्वास किस प्रकार आत्मा की मुद्रा है - इब्रानियों 11:6	19
18 जून: स्वर्गरोहण और तैयारी - 1 थिस्सलनीकियों 4:16-17	20
19 जून: छल की आत्मा - 2 थिस्सलनीकियों 2:9-10	21
20 जून: आध्यात्मिक हमलों का सामना कैसे करें - इफिसियों 6:11	22
21 जून: जब आप जादू-टोने के शिकार हों - यशायाह 54:17	23

सप्ताह 4

22 जून: अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने से आपका आध्यात्मिक जीवन कैसे उन्नत होता है - 1 कुरिन्थियों 14:4	24
23 जून: मूर्ति पूजा के संकेत - निर्गमन 20:3	25
24 जून: उनकी दिव्य प्रकृति में भागीदार होना - 2 पतरस 1:4	26
25 जून: भय और चिंता पर विजय प्राप्त करना - 2 तीमुथियुस 1:7	27
26 जून: आत्मा के अलौकिक सामर्थ्य - इफिसियों 3:16	28
27 जून: पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होना - रोमियों 8:14	29
28 जून: ऊपर से मिली बुद्धि - याकूब 3:17	30

सप्ताह 5

29 जून: देह को क्रूस पर चढ़ाना - गलातियों 5:24	31
30 जून: प्रार्थनापूर्ण जीवन जीना - 1 थिस्सलनीकियों 5:17	32

आत्मा का महीना

यूहन्ना 6:63

"आत्मा ही जीवन देती है; शरीर का कोई महत्व नहीं है। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं, वे आत्मा और जीवन से परिपूर्ण हैं।"

जून के महीने में प्रवेश करते ही, हम इस समय को पवित्र आत्मा को समझने और उसके अनुसार जीवन जीने के लिए समर्पित करते हैं। यह आध्यात्मिक रूप से जागरूक होने का समय है, यह पहचानने का समय है कि हमारा सच्चा जीवन परमेश्वर की आत्मा द्वारा पोषित होता है। कई विश्वासी केवल भौतिक जगत के प्रति सचेत रहते हैं, जबकि परमेश्वर हमें आत्मा से कार्य करने के लिए बुलाता है। यह महीना आपको पवित्र आत्मा के साथ गहन संगति, संवेदनशीलता और विकास की ओर मार्गदर्शन करेगा।

पवित्र आत्मा के माह को समझना

1. आत्मा ही सच्चे जीवन का स्रोत है। यूहन्ना 6:63 हमें दिखाता है कि जीवन आत्मा से उत्पन्न होता है, न कि शरीर से। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "मनुष्य मूलतः आत्मिक है, और जब तक वह इसे नहीं समझ लेता, तब तक वह आत्मिक रूप से संघर्ष करता रहेगा।" आत्मा ही जीवन शक्ति, मार्गदर्शन और दिव्य सामर्थ्य प्रदान करती है।
2. शरीर आध्यात्मिक विकास को बनाए नहीं रख सकता। शरीर सीमित है और आध्यात्मिक परिणाम उत्पन्न नहीं कर सकता। वॉचमैन नी ने इस बात पर जोर दिया कि "शरीर कभी ईश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता; केवल आत्मा ही उसे जवाब दे सकती है।" इसका अर्थ है कि हमारी निर्भरता शारीरिक प्रयासों से हटकर आध्यात्मिक सामंजस्य की ओर होनी चाहिए।
3. आध्यात्मिक जागरूकता का विकास आवश्यक है। पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में जीने के लिए जागरूकता आवश्यक है। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "कई ईसाई आध्यात्मिक रूप से सो रहे हैं क्योंकि वे अपने भीतर पवित्र आत्मा की उपस्थिति को अनदेखा करते हैं।" जागरूकता संवेदनशीलता और सामंजस्य लाती है।
4. पवित्र आत्मा विश्वासी के जीवन का केंद्र है। आत्मा वैकल्पिक नहीं बल्कि अनिवार्य है। चार्ल्स फिन्नी ने इस बात पर जोर दिया कि "पवित्र आत्मा के बिना, ईसाई धर्म शक्तिहीन हो जाता है।" आत्मा द्वारा निर्देशित जीवन शक्ति और परिवर्तन उत्पन्न करता है।
5. यह महीना आत्मीयता का आह्वान है। ईश्वर आपको गहन संगति में आमंत्रित करता है। जब आप पवित्र आत्मा पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो आपका जीवन निर्देशित, परिष्कृत और सशक्त होता है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में जीवन जीने और प्रतिदिन आध्यात्मिक रूप से जागरूक होने का संकल्प लेता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, पवित्र आत्मा के वरदान के लिए आपका धन्यवाद। इस महीने में प्रवेश करते ही, मुझे आपकी उपस्थिति का अधिक अनुभव करने में सहायता कीजिए। मुझे आत्मा के मार्ग पर चलना सिखाइए, न कि शरीर के मार्ग पर। मेरे जीवन को आपकी आत्मा द्वारा निर्देशित, सशक्त और रूपांतरित कीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

आत्मा, मन और शरीर

1 थिस्सलनीकियों 5:23

"हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन पर आपकी आत्मा, मन और शरीर सभी निर्दोष रखे जाएं।"

मनुष्य के स्वभाव को समझना आध्यात्मिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। अनेक विश्वासी आत्मा और प्राण को एक ही समझ लेते हैं, जबकि बाइबल स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि मनुष्य तीन भागों से बना है: प्राण, मन और शरीर। जब इस क्रम को गलत समझा जाता है, तो जीवन असंतुलित हो जाता है। परन्तु जब पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में प्राण आगे बढ़ता है, तो मन और शरीर सही सामंजस्य में आ जाते हैं।

आत्मा, मन और शरीर को समझना

1. मनुष्य एक त्रिगुणित प्राणी है। पवित्रशास्त्र बताता है कि हम आत्मा, मन और शरीर हैं। वॉचमैन नी समझाते हैं कि "आत्मा मनुष्य का सबसे गहरा भाग है जहाँ ईश्वर निवास करते हैं।" शरीर भौतिक है, मन, इच्छाशक्ति और भावनाएँ आत्मा में समाहित हैं, लेकिन दिव्य संबंध आत्मा में ही स्थापित होता है।
2. आत्मा ही आपका वास्तविक स्वरूप है। आपकी आत्मा ही आपकी सच्ची पहचान है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "आप एक शरीर नहीं हैं जिसमें आत्मा है, आप एक आत्मा हैं जिसमें शरीर है।" यह समझ आपके जीने के तरीके और ईश्वर के साथ आपके संबंध को बदल देती है।
3. आत्मा को भावना के मार्गदर्शन में चलना चाहिए। आत्मा में आपके विचार और भावनाएँ समाहित होती हैं, लेकिन उसे नेतृत्व नहीं करना चाहिए। डॉ. योगी चो ने इस बात पर जोर दिया कि "जब आत्मा नेतृत्व करती है, तो भ्रम उत्पन्न होता है, लेकिन जब भावना नेतृत्व करती है, तो स्पष्टता आती है।"
4. शरीर को आत्मा के अधीन होना चाहिए। शरीर शारीरिक इच्छाओं के प्रति प्रतिक्रिया करता है, लेकिन इसे अनुशासित रखना आवश्यक है। चार्ल्स फिज़ी ने सिखाया कि "शरीर द्वारा शासित जीवन कमजोरी की ओर ले जाता है, जबकि आत्मा द्वारा शासित जीवन शक्ति की ओर ले जाता है।"
5. सामंजस्य स्थिरता लाता है। जब आपकी आत्मा ईश्वर के साथ संगति में होती है, तो आपका मन स्थिर हो जाता है और आपका शरीर अनुशासित हो जाता है। यही वह व्यवस्था है जिसे ईश्वर ने बनाया है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मेरी आत्मा मेरे मन और शरीर को ईश्वर के अनुरूप मार्गदर्शन करती है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मेरे सच्चे स्वरूप को प्रकट करने के लिए आपका धन्यवाद। मुझे आपकी आत्मा के मार्गदर्शन में एक आत्मिक प्राणी के रूप में जीवन जीने में सहायता कीजिए। मेरी आत्मा और शरीर को आपकी इच्छा के अनुरूप होने दीजिए। मुझे अनुशासन और आत्मिक समझ के मार्ग पर चलना सिखाइए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेमस ग्लोबल"

किसी व्यक्ति का अदृश्य पक्ष

2 कुरिन्थियों 4:18

इसलिए हम अपनी निगाहें दिखाई देने वाली चीजों पर नहीं, बल्कि अदृश्य चीजों पर टिकाते हैं, क्योंकि जो दिखाई देता है वह क्षणभंगुर है, परन्तु जो अदृश्य है वह शाश्वत है।

हर व्यक्ति का एक अदृश्य पहलू होता है जो उसके जीवन के परिणाम को निर्धारित करता है। जहाँ कई लोग बाहरी दिखावट और भौतिक वास्तविकताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वहीं ईश्वर आंतरिक व्यक्तित्व को देखता है। आपकी आत्मा आपका अदृश्य भाग है, फिर भी यह आपके जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव डालती है। आध्यात्मिक विकास और स्थायी परिवर्तन के लिए अपने आंतरिक व्यक्तित्व का विकास अत्यंत आवश्यक है।

किसी व्यक्ति के अदृश्य पक्ष को समझना

1. आपका अंतर्मन ही वास्तविक मनुष्य है। आपका अदृश्य भाग ही आपका सच्चा स्वरूप है। वॉचमैन नी ने सिखाया था कि "बाहरी मनुष्य नष्ट हो जाता है, परन्तु अंतर्मन को प्रतिदिन नवीकृत करना आवश्यक है।" आपके भीतर जो घटित होता है, वही आपके जीवन को आकार देता है।
2. आध्यात्मिक वास्तविकताएँ शाश्वत हैं। जो दिखाई देता है वह क्षणभंगुर है, परन्तु जो अदृश्य है वह शाश्वत है। केनेथ हेगिन ने इस बात पर ज़ोर दिया कि "आध्यात्मिक जगत भौतिक जगत से कहीं अधिक वास्तविक है।" इसे समझने से आपकी प्राथमिकताएँ बदल जाती हैं।
3. आपकी आंतरिक स्थिति आपके बाहरी जीवन को निर्धारित करती है। यदि आपकी आत्मा मजबूत है, तो आपका जीवन इसे प्रतिबिंबित करता है। चार्ल्स फिन्नी ने सिखाया कि "पुनरुत्थान भीतर से शुरू होता है, इससे पहले कि वह बाहरी रूप से प्रकट हो।" परिवर्तन भीतर से शुरू होता है।
4. आंतरिक व्यक्तित्व का विकास आवश्यक है: शरीर की तरह ही, आत्मा का भी विकास होना चाहिए। डॉ. योंगी चो ने इस बात पर जोर दिया कि "प्रार्थना और ईश्वर का वचन आंतरिक व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।" विकास के बिना, आत्मा कमजोर बनी रहती है।
5. ईश्वर भीतर से कार्य करता है। ईश्वर आपको बाहरी रूप से बदलने से पहले आंतरिक रूप से बदलता है। यही सच्ची आध्यात्मिक उन्नति का स्वरूप है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं प्रतिदिन अपने भीतर के व्यक्तित्व का विकास करता हूँ और आत्मा में अधिक मजबूत होता जाता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझमें जीवन प्रदान करने के लिए आपका धन्यवाद। मुझे अदृश्य पर ध्यान केंद्रित करने और अपने अंतर्मन को विकसित करने में सहायता कीजिए। अपने वचन और उपस्थिति से मेरी आत्मा को बल दीजिए। मेरे जीवन में मेरे भीतर हो रहे परिवर्तन की झलक दिखाई दे। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेमस ग्लोबल"

पुनर्जन्म होना

यूहन्ना 3:6

"शरीर से शरीर का जन्म होता है, परन्तु आत्मा से आत्मा का जन्म होता है।"

पुनर्जन्म ईसाई जीवन की नींव है। यह कोई शारीरिक परिवर्तन नहीं बल्कि एक आध्यात्मिक रूपांतरण है जो व्यक्ति के भीतर घटित होता है। बहुत से लोग चर्च जाते हैं या धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करते हैं, फिर भी उन्होंने आत्मा के सच्चे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं किया होता। जब कोई व्यक्ति पुनर्जन्म लेता है, तो उसकी आत्मा ईश्वर के प्रति सजीव हो जाती है, जिससे वह ईश्वर के साथ एक सच्चा संबंध स्थापित कर पाता है।

पुनर्जन्म को समझना

1. नया जन्म एक आध्यात्मिक अनुभव है। यीशु यह स्पष्ट करते हैं कि पुनः जन्म आत्मा से होता है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "नया जन्म मानव आत्मा का पुनर्निर्माण है।" यह बाहरी नहीं बल्कि आंतरिक है।
2. उद्धार से पहले, मनुष्य की आत्मा परमेश्वर से अलग हो जाती है। वॉचमैन नी बताते हैं कि "मनुष्य की आत्मा परमेश्वर के प्रति मृत होती है जब तक कि परमेश्वर उसे पुनर्जीवित न कर दे।" पुनर्जन्म उस संबंध को पुनः स्थापित करता है।
3. पुराने स्वभाव का नए जीवन से स्थानापन्न होना: आप अब पहले जैसे व्यक्ति नहीं रह जाते। चार्ल्स फिन्नी ने इस बात पर जोर दिया कि "सच्चा रूपांतरण स्वभाव में परिवर्तन लाता है।" यह परिवर्तन आत्मा से शुरू होता है।
4. यह आध्यात्मिक विकास की शुरुआत है। पुनर्जन्म अंत नहीं बल्कि शुरुआत है। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "एक बार आत्मा का पुनर्जन्म हो जाने पर, उसे वचन और प्रार्थना के माध्यम से विकसित होना चाहिए।"
5. यह ईश्वर के साथ संगति को संभव बनाता है। नए जन्म के बिना सच्ची संगति असंभव है। पुनर्जन्मित आत्मा वह माध्यम बन जाती है जिसके द्वारा आप ईश्वर से संबंध स्थापित करते हैं।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मेरा पुनर्जन्म हुआ है, और मेरी आत्मा ईश्वर के प्रति समर्पित है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मसीह में नए जीवन के उपहार के लिए आपका धन्यवाद। मुझे पुनर्जन्म की वास्तविकता को समझने और जीने में सहायता कीजिए। मेरी आत्मा को बढ़ने दीजिए और प्रतिदिन आपसे जुड़े रहने दीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

अपनी मानवीय आत्मा के माध्यम से ईश्वर से जुड़ना

रोमियों 8:16

पवित्र आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं।

ईश्वर हमसे हमारी आत्मा के माध्यम से जुड़ता है, न कि हमारी शारीरिक इंद्रियों के माध्यम से। कई विश्वासी ईश्वर की आवाज़ सुनने में संघर्ष करते हैं क्योंकि वे उसे बाहरी रूप से खोजते हैं, जबकि वह आंतरिक रूप से, हमारी आत्मा के माध्यम से संवाद करता है। अपनी आत्मा के माध्यम से ईश्वर से जुड़ना सीखना आध्यात्मिक विकास और घनिष्ठता के लिए आवश्यक है।

अपनी आत्मा के माध्यम से ईश्वर से जुड़ना समझना

1. ईश्वर आत्मा से आत्मा तक संवाद करता है। ईश्वर स्वयं आत्मा है, और वह आत्मा के माध्यम से संवाद करता है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "ईश्वर अंतर्मन से बात करता है, न कि बाहरी मनुष्य से।"
2. मानवीय आत्मा संगति का स्थान है। आपकी आत्मा ही वह स्थान है जहाँ ईश्वर से संवाद होता है। वॉचमैन नी ने इस बात पर जोर दिया कि "ईश्वर के साथ सच्ची उपासना और संगति आत्मा में ही होती है।"
3. संवेदनशीलता विकसित करनी होगी: आध्यात्मिक संवेदनशीलता अपने आप नहीं आती। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "आपको प्रार्थना और ध्यान के माध्यम से अपनी आत्मा को प्रशिक्षित करना होगा।"
4. बाहरी व्यवधानों को कम करना आवश्यक है। शोर और व्यस्तता आध्यात्मिक संबंध में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं। चार्ल्स फिन्नी ने इस बात पर जोर दिया कि "ईश्वर के समक्ष शांति आध्यात्मिक बोध को तीव्र करती है।"
5. निरंतरता संबंध को गहरा करती है: आप अपने मन में ईश्वर के साथ जितना अधिक जुड़ेंगे, संबंध उतना ही मजबूत होता जाएगा।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं प्रतिदिन अपनी आत्मा के माध्यम से ईश्वर से जुड़ता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मेरी आत्मा के प्रति जागरूकता बढ़ाने और आपसे गहन संबंध स्थापित करने में मेरी सहायता कीजिए। मुझे आपकी वाणी सुनना और आपके साथ निरंतर संगति में रहना सिखाइए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन

रोमियों 8:14

"जो लोग परमेश्वर की आत्मा द्वारा निर्देशित होते हैं, वे ही परमेश्वर के बच्चे हैं।"

पवित्र आत्मा को विश्वासियों को जीवन के हर पहलू में मार्गदर्शन देने के लिए दिया गया है। बहुत से लोग निर्णय लेने में कठिनाई महसूस करते हैं क्योंकि वे पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के बजाय अपनी समझ पर भरोसा करते हैं। जब हम पवित्र आत्मा का अनुसरण करना सीखते हैं, तो वह हमें दिशा, स्पष्टता और ज्ञान प्रदान करता है।

पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन को समझना

1. आत्मा भीतर से मार्गदर्शन करती है। मार्गदर्शन आंतरिक रूप से आता है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "आंतरिक साक्षी ही वह प्राथमिक तरीका है जिससे ईश्वर अपने बच्चों का मार्गदर्शन करता है।"
2. परमेश्वर के बच्चे पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होते हैं। पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होना परिपक्वता का संकेत है। वॉचमैन नी ने इस बात पर जोर दिया कि "एक आध्यात्मिक व्यक्ति भावनाओं से नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होता है।"
3. पवित्र आत्मा मार्गदर्शन के रूप में शांति प्रदान करती है। शांति अक्सर पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का संकेत होती है। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "ईश्वर का मार्गदर्शन दिव्य आश्वासन लेकर आता है।"
4. आज्ञापालन से मार्गदर्शन मजबूत होता है। आप जितना अधिक आज्ञापालन करेंगे, उसकी वाणी उतनी ही स्पष्ट होती जाएगी। चार्ल्स फिन्नी ने सिखाया कि "आज्ञापालन से गहन रहस्योद्घाटन का द्वार खुलता है।"
5. अवज्ञा संवेदनशीलता को कमजोर करती है। आत्मा की अनदेखी भ्रम और दूरी की ओर ले जाती है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं हर बात में परमेश्वर की आत्मा द्वारा निर्देशित होता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, पवित्र आत्मा के लिए आपका धन्यवाद। मुझे उनके मार्गदर्शन को पहचानने और निष्ठापूर्वक उनका अनुसरण करने में सहायता कीजिए। मेरे निर्णयों का मार्गदर्शन कीजिए और मेरे कदमों को आपकी इच्छा के अनुरूप कीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

मानव हृदय में व्याप्त बुराई पर विजय प्राप्त करना

यिर्मयाह 17:9

"मन सबसे अधिक कपटी और लाइलाज है। इसे कौन समझ सकता है?"

विश्वासी के जीवन की सबसे बड़ी लड़ाइयों में से एक है हृदय में व्याप्त बुराई से लड़ना। परमेश्वर के प्रभाव के बिना मनुष्य का हृदय आसानी से अहंकार, कड़वाहट, वासना, ईर्ष्या, घृणा और विद्रोह का स्थान बन सकता है। बहुत से लोग केवल बाहरी दिखावट और व्यवहार पर ध्यान देते हैं, लेकिन परमेश्वर गहराई से देखता है। वह हृदय की स्थिति की जांच करता है। इसलिए सच्चा परिवर्तन भीतर से ही शुरू होना चाहिए। बुराई पर विजय केवल मानवीय प्रयासों से नहीं मिलती, बल्कि परमेश्वर की शुद्ध करने वाली शक्ति और पवित्र आत्मा के पवित्र करने वाले कार्य से मिलती है।

मानव हृदय में व्याप्त बुराई को समझना और उस पर विजय प्राप्त करना

1. मनुष्य का स्वाभाविक हृदय पतित है। यिर्मयाह 17:9 परमेश्वर के बिना मनुष्य के हृदय की वास्तविक स्थिति को प्रकट करता है। यह कपटी और अविश्वसनीय है। चार्ल्स जी. फिन्नी ने सिखाया कि "मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या उसका परिवेश नहीं, बल्कि उसके भीतर का भ्रष्टाचार है।" यही कारण है कि लोग बाहरी रूप से भले ही अच्छे दिखें, लेकिन भीतर से संघर्ष करते रहते हैं। परमेश्वर के बिना, हृदय व्यक्ति को गलत इच्छाओं और गलत निर्णयों की ओर ले जा सकता है। हमें कभी भी परमेश्वर के वचन से ऊपर शरीर पर भरोसा नहीं करना चाहिए।

2. केवल ईश्वर ही हृदय की सच्ची जानकारी रखते हैं। बहुत से लोग स्वयं को गलत समझते हैं क्योंकि हृदय अपने वास्तविक इरादों को छिपा सकता है। केवल ईश्वर ही इसे पूरी तरह से जान सकते हैं। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "ईश्वर का वचन उन बातों को उजागर करता है जिन्हें मनुष्य का मन छिपाने की कोशिश करता है।" जब हम सच्चे मन से ईश्वर के समक्ष आते हैं, तो वह हमें वह प्रकट करते हैं जो हमारे भीतर परिवर्तन की आवश्यकता है। यह आवश्यक है क्योंकि सत्य के प्रकट होने पर ही उपचार शुरू होता है।

3. पवित्र आत्मा अंतर्मन को शुद्ध करता है। आप केवल इच्छाशक्ति से सांसारिक इच्छाओं को दूर नहीं कर सकते। पवित्र आत्मा को आपके भीतर कार्य करना होगा। वॉचमैन नी ने इस बात पर जोर दिया कि "क्रूस पुराने स्वभाव से निपटता है, और आत्मा उस विजय को दैनिक जीवन में साकार करता है।" जैसे ही आप पवित्र आत्मा के प्रति समर्पित होते हैं, वह आपको दोषी ठहराता है, सुधारता है और आपके अंतर्मन को शुद्ध करता है। वह कड़वाहट, अहंकार, स्वार्थी महत्वाकांक्षा और हर प्रकार के छिपे हुए भ्रष्टाचार को तोड़ता है।

4. परमेश्वर का वचन हृदय को शुद्ध करता है। वचन केवल जानकारी नहीं है, बल्कि यह शुद्ध करने की शक्ति है। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "जब वचन हृदय में प्रवेश करता है, तो यह अंधकार को जड़ से उखाड़ फेंकता है और दिव्य जीवन का बीज बोता है।" जितना अधिक आप पवित्रशास्त्र का अध्ययन करेंगे, उतना ही आपका हृदय शुद्ध होगा। जो आपके हृदय को भरता है, वही अंततः आपके वाणी, आपके निर्णयों और आपके जीवन को आकार देता है। इसलिए अपने हृदय में प्रवेश करने वाली बातों की रक्षा करना इतना महत्वपूर्ण है।

5. समर्पित हृदय परमेश्वर की महिमा का पात्र बन जाता है। जब आपका हृदय समर्पित होता है, तो परमेश्वर आप पर और अधिक भरोसा कर सकते हैं। वे आपको भर सकते हैं, आपका मार्गदर्शन कर सकते हैं और आपका उपयोग कर सकते हैं। जैक कोए अक्सर उपदेश देते थे कि "परमेश्वर समर्पित पात्रों के माध्यम से कार्य करते हैं।" परमेश्वर के समक्ष विनम्र हृदय उनकी शक्ति का निवास स्थान बन जाता है। सच्ची विजय केवल बुराई से बचना ही नहीं है, बल्कि पवित्रता, प्रेम और आज्ञाकारिता का पात्र बनना है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मेरा हृदय परमेश्वर के वचन से शुद्ध हुआ है और पवित्र आत्मा द्वारा रूपांतरित हुआ है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मनुष्य के हृदय के सत्य को प्रकट करने के लिए आपका धन्यवाद। मेरी जाँच कीजिए और मेरे भीतर की उन सभी बातों को उजागर कीजिए जो आपको प्रसन्न नहीं करतीं। मुझे अहंकार, कटुता, वासना, क्रोध और हर बुरी इच्छा से शुद्ध कीजिए। आपका पवित्र आत्मा मेरे अंतर्मन को पवित्र करे और मेरे हृदय को ऐसा पात्र बनाए जो आपको सम्मान करे। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्प्रिट फ्लेम्स ग्लोबल"

आध्यात्मिक बातें सीखना

1 कुरिन्थियों 2:14

"जिस व्यक्ति में पवित्र आत्मा नहीं है, वह परमेश्वर की आत्मा से आने वाली बातों को स्वीकार नहीं करता, बल्कि उन्हें मूर्खता समझता है और उन्हें समझ नहीं पाता, क्योंकि उन्हें केवल पवित्र आत्मा के द्वारा ही समझा जा सकता है।"

आध्यात्मिक बातों को केवल प्राकृतिक तर्क से नहीं समझा जा सकता। यही बात कई विश्वासियों को सबसे अधिक निराश करती है। वे परमेश्वर की बातों को केवल बुद्धि से समझने का प्रयास करते हैं, जबकि आत्मा की भूमिका को अनदेखा कर देते हैं। परमेश्वर के सत्य केवल अकादमिक अवधारणाएँ नहीं हैं। वे आध्यात्मिक वास्तविकताएँ हैं जिन्हें पवित्र आत्मा द्वारा प्रकट किया जाना चाहिए। जो विश्वासी आध्यात्मिक उन्नति चाहता है, उसे परमेश्वर की आत्मा पर निर्भर रहकर आध्यात्मिक समझ प्राप्त करना सीखना चाहिए।

आध्यात्मिक बातों को समझना और सीखना

1. आध्यात्मिक सत्य के लिए आध्यात्मिक विवेक आवश्यक है। पौलुस स्पष्ट करते हैं कि केवल सांसारिक समझ ही पर्याप्त नहीं है। परमेश्वर की बातों को आध्यात्मिक रूप से समझना आवश्यक है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "बाइबल केवल मन को जानकारी देने के लिए नहीं बल्कि आत्मा को पोषण देने के लिए लिखी गई थी।" इसका अर्थ है कि आध्यात्मिक शिक्षा तब शुरू होती है जब अंतर्मन परमेश्वर के प्रति ग्रहणशील हो जाता है। कोई व्यक्ति सांसारिक मामलों में बुद्धिमान हो सकता है, लेकिन आध्यात्मिक सत्य के मामले में मंदबुद्धि रह सकता है।
2. प्राकृतिक मन की सीमाएँ हैं। मानवीय तर्क का महत्व है, लेकिन यह ईश्वरीय ज्ञान का स्थान नहीं ले सकता। वॉचमैन ने समझाया कि "मन सत्य का विश्लेषण कर सकता है, लेकिन केवल आत्मा ही उसे वास्तव में ग्रहण कर सकती है।" यही कारण है कि कुछ सत्य शब्दों में सरल प्रतीत होते हैं, फिर भी आत्मा द्वारा प्रकट किए जाने पर उनमें गहरी शक्ति होती है। ईश्वर की बातों को समझने के लिए हमें कभी भी केवल बुद्धि पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।
3. पवित्र आत्मा आत्मिक बातों का शिक्षक है। यीशु ने वादा किया था कि पवित्र आत्मा हमें सिखाएगा। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "पवित्र आत्मा वचन को जीवन देता है और विश्वासी के लिए उसके अर्थ को खोलता है।" जब आप प्रार्थनापूर्वक पवित्रशास्त्र पढ़ते हैं, तो आत्मा छिपी हुई बातों को प्रकाशित करना शुरू कर देता है। वह सत्य को किताबों से परे ले जाकर आपकी आत्मा में स्थापित करता है। इसी तरह व्यक्तिगत ज्ञान प्राप्त होता है।
4. आध्यात्मिक ज्ञान के लिए नम्रता आवश्यक है। अहंकार ज्ञान प्राप्ति में बाधक होता है। अहंकारी हृदय सोचता है कि उसे पहले से ही पर्याप्त ज्ञान है। चार्ल्स जी. फिज़ी ने सिखाया कि "सीखने की इच्छा रखना ईश्वर की कृपा का संकेत है।" यदि आप आध्यात्मिक बातें सीखना चाहते हैं, तो आपको ईश्वर के समक्ष नम्र रहना चाहिए। पवित्र आत्मा उन्हीं को सिखाता है जो सुनने, अपनी गलतियों को सुधारने और आगे बढ़ने के लिए तत्पर रहते हैं।
5. अभ्यास से ज्ञान का गहरा होना: आध्यात्मिक सत्य तब और स्पष्ट हो जाता है जब उसका पालन किया जाता है। जैक कोए अक्सर इस बात पर जोर देते थे कि जो विश्वासी परमेश्वर द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलते हैं, उन्हीं के माध्यम से शक्ति प्रवाहित होती है। जब आप प्रार्थना, आराधना, आज्ञापालन और दैनिक जीवन में आध्यात्मिक सत्यों को अपनाते हैं, तो समझ गहरी होती जाती है। ज्ञान का विकास केवल प्रशंसा के लिए नहीं है, बल्कि यह परिवर्तन के लिए है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मुझे पवित्र आत्मा के माध्यम से आध्यात्मिक समझ प्राप्त होती है, और मेरी आत्मा ईश्वर के सत्य के लिए खुली है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, आध्यात्मिक समझ के वरदान के लिए आपका धन्यवाद। मेरी सहायता कीजिए कि मैं केवल प्राकृतिक तर्क पर निर्भर न रहूँ, बल्कि आपकी आत्मा द्वारा सत्य ग्रहण करूँ। मेरी अंतरात्मा को खोलिए और मुझे परमेश्वर के गहन विषयों को सिखाइए। मेरा हृदय आपके समक्ष नम्र और सीखने के लिए तत्पर रहे। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्प्रिट फ्लेम्स ग्लोबल"

आध्यात्मिक भजनों का गायन

इफिसियों 5:19

"एक दूसरे से भजन, स्तुति गीत और आत्मा से प्रेरित गीतों से बातें करो। अपने हृदय से प्रभु के लिए गाओ और संगीत बजाओ।"

हृदय से निकले और पवित्र आत्मा से प्रेरित गीतों में गहरी आध्यात्मिक शक्ति होती है। आध्यात्मिक भजन गाना केवल एक संगीतमय गतिविधि नहीं है। यह ईश्वर की सेवा करने, आत्मा को मजबूत करने, विश्वास का वातावरण बनाने और उदासी को दूर भगाने का एक तरीका है। कई विश्वासी इस बात को कम आंकते हैं कि सच्चे मन से प्रभु की स्तुति करने पर क्या प्रभाव पड़ता है। पवित्र आत्मा से प्रेरित गीत मन को तरोताजा करते हैं और ईश्वर की उपस्थिति को महसूस करने का अवसर प्रदान करते हैं।

आध्यात्मिक भजनों को गाना समझना

1. आध्यात्मिक गीत आंतरिक व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। जब आप हृदय से परमेश्वर के लिए गीत गाते हैं, तो आपकी आत्मा मजबूत होती है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "आध्यात्मिक गीत आस्था को जगाते हैं और विश्वासी को परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति सचेत रहने में मदद करते हैं।" गाना केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह आध्यात्मिक उत्थान है। जो विश्वासी समझ के साथ प्रभु के लिए गीत गाता है, वह अपनी आत्मा को जीवन से पोषित करता है।

2. आराधना से ईश्वरीय वातावरण बनता है। आध्यात्मिक जीवन में वातावरण का महत्व होता है। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "स्तुति हृदय के वातावरण को बदल देती है और पवित्र आत्मा की उपस्थिति का आह्वान करती है।" जब आध्यात्मिक गीत किसी स्थान को भर देते हैं, तो उत्पीड़न अपना प्रभाव खोने लगता है। भय, उदासी और भ्रम को ईश्वर की उपस्थिति से चुनौती मिलती है। यही कारण है कि आराधना विश्वासी के जीवन का इतना शक्तिशाली हिस्सा है।

3. भावपूर्ण गायन प्रदर्शन से अधिक महत्वपूर्ण है। ईश्वर प्रदर्शन नहीं, बल्कि सच्ची भावना की तलाश में हैं। वॉचमैन नी ने इस बात पर जोर दिया कि "जो आत्मा से निकलता है, वह ईश्वर तक केवल होठों से निकलने वाली बातों से कहीं अधिक पहुँचता है।" आध्यात्मिक भजन तभी प्रभावी होते हैं जब वे सच्चे हों। हृदय का जुड़ाव आवश्यक है। ईश्वर प्रेम, आदर और सहभागिता से निकले गीतों को स्वीकार करते हैं।

4. गीत ज्ञान और चंगाई ला सकते हैं। कई बार, ईश्वर आराधना के माध्यम से ऐसे तरीके से सेवा करते हैं जिन्हें केवल शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता। जैक कोए ने पुनरुत्थान सभाओं में उपदेश दिया जहाँ गीतों ने लोगों को चंगाई और मुक्ति के लिए तैयार करने में मदद की। आध्यात्मिक गीत टूटे हुए लोगों को सांत्वना, परेशान लोगों को शांति और थके हुए लोगों को नया विश्वास दे सकते हैं। पवित्र आत्मा अक्सर आराधना का उपयोग विश्वासियों के हृदयों को खोलने के लिए करता है।

5. गीत गाने वाला विश्वासी अक्सर मजबूत विश्वासी होता है। जो लोग आध्यात्मिक गीतों से परिपूर्ण रहते हैं, वे आध्यात्मिक रूप से तरोताजा रहते हैं। चार्ल्स जी. फिन्नी ने देखा कि गहन आराधना के दौर अक्सर पुनरुत्थान के दौर से पहले आते हैं। जब आत्मा के गीत आपके जीवन को भर देते हैं, तो बड़बड़ाहट कम हो जाती है और कृतज्ञता बढ़ जाती है। आध्यात्मिक भजन आपके हृदय को ईश्वर पर केंद्रित रखने में सहायक होते हैं।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं हृदय से प्रभु की स्तुति करता हूँ, और आत्मा के गीतों से मेरी आत्मा को शक्ति मिलती है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, आराधना के वरदान के लिए आपका धन्यवाद। मेरे हृदय को आत्मा के गीतों से भर दीजिए और मेरे जीवन को स्तुति से परिपूर्ण कर दीजिए। आध्यात्मिक भजनों के द्वारा मेरे अंतर्मन को बल दीजिए और जहाँ भी मैं आपकी आराधना करता हूँ, वहाँ आपकी उपस्थिति व्याप्त कर दीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

आत्माओं का विवेक

1 कुरिन्थियों 12:10

"...दूसरों के बीच अंतर करने के लिए..."

जो कुछ भी आध्यात्मिक प्रतीत होता है, वह सब ईश्वर की ओर से नहीं होता। विश्वासी के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण वरदानों और अनुशासनों में से एक है विवेक। छल, झूठे दिखावाँ और आध्यात्मिक भ्रम से भरी इस दुनिया में, विश्वासियों को यह सीखना चाहिए कि ईश्वर की ओर से क्या है, मनुष्य की ओर से क्या है और शत्रु की ओर से क्या है। आत्माओं का विवेक सुरक्षा, ज्ञान और ईश्वर के साथ सही मार्ग पर चलने के लिए आवश्यक है।

आत्माओं को समझने और पहचानने की क्षमता

1. हर आत्मा परमेश्वर की ओर से नहीं होती: आध्यात्मिक गतिविधि की उपस्थिति का यह अर्थ नहीं है कि उसमें परमेश्वर की भूमिका है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "विश्वासियों को हर आध्यात्मिक अभिव्यक्ति से बहकना नहीं चाहिए!" कुछ चीजें शक्तिशाली, भावनात्मक या अलौकिक प्रतीत हो सकती हैं, फिर भी वे पवित्र आत्मा से नहीं आतीं। इसीलिए विवेक आवश्यक है।
2. विवेक विश्वासी को धोखे से बचाता है। मसीही जीवन में अनेक गलतियाँ विवेक की कमी से उत्पन्न होती हैं। वॉचमैन नी ने इस बात पर जोर दिया कि "आध्यात्मिक विवेक के बिना, विश्वासी आत्मिक शक्ति को आध्यात्मिक शक्ति समझ बैठें।" शत्रु अक्सर सूक्ष्म तरीकों से अपना रूप धारण कर लेता है। विवेक आपको धोखे से बचने और सत्य में दृढ़ रहने में मदद करता है।
3. पवित्र आत्मा स्पष्टता प्रदान करती है। विवेक संदेह या भय नहीं है। यह आध्यात्मिक स्पष्टता है। डॉ. योंगी चो ने सिखाया कि "पवित्र आत्मा वह प्रकट करती है जो सामान्य अवलोकन से नहीं देखा जा सकता।" कई बार आत्मा आपको आंतरिक रूप से चेतावनी देती है, किसी बात को लेकर बेचैनी पैदा करती है, या सतह के नीचे छिपी बातों को देखने के लिए आपकी आँखें खोल देती है। यही उसकी सुरक्षा है।
4. परमेश्वर का वचन विवेक का मानक है। सभी विवेक की कसौटी पवित्रशास्त्र है। चार्ल्स जी. फिन्नी ने सिखाया कि "जो कुछ भी परमेश्वर के स्वरूप और सत्य के विपरीत हो, उसे अस्वीकार कर देना चाहिए।" यहाँ तक कि अंतर्ज्ञान, स्वप्न, भविष्यवाणियों और अनुभव भी वचन के अनुसार परखे जाने चाहिए। पवित्र आत्मा कभी भी उस सत्य के विपरीत मार्गदर्शन नहीं करता जो उसने पवित्रशास्त्र में प्रेरित किया है।
5. पवित्र जीवन विवेक को तेज करता है। समझौतावादी जीवन आध्यात्मिक इंद्रियों को मंद कर सकता है। जैक कोए अक्सर उपदेश देते थे कि पवित्रता और शक्ति साथ-साथ चलती हैं। आप जितना अधिक ईश्वर के प्रति समर्पित होंगे, आपका विवेक उतना ही स्पष्ट होगा। पाप, देह और निरंतर भटकाव आत्मा की तीक्ष्णता को कम कर देते हैं। लेकिन प्रार्थना, पवित्रता और ईश्वर के साथ संगति सही ढंग से समझने की आपकी क्षमता को बढ़ाती है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं आध्यात्मिक विवेक के मार्ग पर चलता हूँ, और पवित्र आत्मा मुझे सत्य और असत्य में अंतर करने में मदद करती है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, विवेक का वरदान देने के लिए आपका धन्यवाद। मुझे छल से बचाएँ और यह पहचानना सिखाएँ कि वास्तव में आपसे क्या है। मेरी आत्मिक इंद्रियों को तीव्र करें और मुझे अपने वचन में स्थिर रखें। आपका पवित्र आत्मा मुझे सत्य के मार्ग पर ले जाए और मुझे भ्रम से बचाए रखे। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेमस ग्लोबल"

आपकी मानवीय आत्मा को परमेश्वर की पवित्र आत्मा के साथ संगति की आवश्यकता है।

2 कुरिन्थियों 13:14

प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की संगति आप सभी के साथ रहे।

मसीही जीवन पवित्र आत्मा के साथ संगति के बिना जीने के लिए नहीं बना है। बहुत से विश्वासी पवित्र आत्मा के बारे में जानते हैं, लेकिन वे सक्रिय रूप से उससे संवाद नहीं करते। आपकी आत्मा परमेश्वर की आत्मा के साथ संवाद करने के लिए बनी है। इस संगति के बिना, आध्यात्मिक सूखापन आसानी से आ जाता है। लेकिन जब आपकी आत्मा पवित्र आत्मा के साथ संगति में रहती है, तो शक्ति, मार्गदर्शन, शांति और आध्यात्मिक संवेदनशीलता बढ़ती है।

पवित्र आत्मा के साथ संगति को समझना

1. पवित्र आत्मा के साथ संगति दैनिक आवश्यकता है। पौलुस पवित्र आत्मा की संगति को एक वास्तविक और निरंतर अनुभव के रूप में वर्णित करता है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "पवित्र आत्मा केवल उपयोग करने की शक्ति नहीं है, बल्कि एक ऐसा व्यक्ति है जिसे जानना आवश्यक है।" संगति का अर्थ है संबंध, सहभागिता और जागरूकता। केवल चर्च में ही उनका आभार व्यक्त करना पर्याप्त नहीं है। वे दैनिक संवाद चाहते हैं।
2. आपकी मानवीय आत्मा ईश्वरीय संगति के लिए बनी है। ईश्वर ने मनुष्य को उसे गहराई से जानने की क्षमता के साथ सृजित किया है। वॉचमैन नी ने समझाया है कि "आत्मा वह अंग है जिसके द्वारा मनुष्य ईश्वर से संवाद करता है।" इसका अर्थ है कि सच्चा आध्यात्मिक जीवन संगति पर निर्भर करता है। जब आपकी आत्मा ईश्वर से संवाद से अलग हो जाती है, तो आप बाहरी रूप से धार्मिक तो दिख सकते हैं, लेकिन आंतरिक रूप से आप कमजोर होने लगते हैं।
3. संगति संवेदनशीलता बढ़ाती है: आप पवित्र आत्मा के साथ जितना अधिक समय बिताते हैं, उतना ही आप उसकी वाणी और कार्यों के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "पवित्र आत्मा के साथ घनिष्टता आध्यात्मिक जागरूकता बढ़ाती है।" उसकी प्रेरणाएं अधिक स्पष्ट हो जाती हैं। उसकी शांति अधिक महसूस होने लगती है। उसके सुधार अधिक अर्थपूर्ण हो जाते हैं। संगति आपकी आत्मा को सजग बनाती है।
4. संगति से आंतरिक शक्ति बढ़ती है। संगति की उपेक्षा करने वाला विश्वासी व्यस्त रहते हुए भी आध्यात्मिक रूप से कमजोर हो सकता है। चार्ल्स जी. फिन्नी ने ईश्वर के साथ जीवंत संबंध बनाए रखने के महत्व पर बल दिया। प्रार्थना, आराधना, वचन का मनन और ईश्वर के समक्ष एकांतवास, ये सभी आंतरिक शक्ति प्रदान करते हैं। संगति वह स्थान है जहाँ आत्मा को ताजगी मिलती है।
5. पवित्र आत्मा के साथ घनिष्टता फल और सामर्थ्य उत्पन्न करती है। विश्वासी की सामर्थ्य केवल शोर या गतिविधियों से नहीं आती। यह परमेश्वर के साथ संगति से उत्पन्न होती है। जैक कोए ने प्रत्यक्ष सामर्थ्य के साथ सेवकाई की, लेकिन उनके जैसे पुनरुत्थान के सेवकाई कार्य पवित्र आत्मा पर गहरी निर्भरता पर आधारित थे। संगति चरित्र और सामर्थ्य दोनों उत्पन्न करती है। यह विश्वासी को शक्ति और पवित्रता में चलने के लिए प्रेरित करती है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मेरी आत्मा पवित्र आत्मा के साथ संगति में बनी रहती है, और मैं प्रतिदिन ईश्वर में और अधिक मजबूत होता जाता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, पवित्र आत्मा की संगति के लिए आपका धन्यवाद। मुझे प्रतिदिन उनसे संगति करना और उनकी उपस्थिति के प्रति सजग रहना सिखाइए। मेरी आत्मा को आपकी आत्मा से जुड़ा रहने दीजिए, और निरंतर संगति के द्वारा मेरे अंतर्मन को बल प्रदान कीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

उन पदार्थों से बचें जो आपकी मानवीय भावना को ठेस पहुंचाते हैं।

1 कुरिन्थियों 6:19

क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है, जो तुममें निवास करता है, जिसे तुमने परमेश्वर से प्राप्त किया है?

विश्वासी को यह समझना चाहिए कि जो शरीर को प्रभावित करता है, वह आध्यात्मिक संवेदनशीलता को भी प्रभावित कर सकता है। कई लोग हानिकारक पदार्थों के सेवन के केवल शारीरिक परिणामों के बारे में सोचते हैं, लेकिन इनके आध्यात्मिक परिणाम भी होते हैं। कोई भी ऐसी चीज़ जो मन को भ्रमित करती है, अनुशासन को कमजोर करती है, बंधन का द्वार खोलती है, या ईश्वर के प्रति आपकी जागरूकता को कम करती है, वह आपके आध्यात्मिक जीवन के लिए खतरनाक हो सकती है। क्योंकि आपका शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है, इसलिए इसके साथ सम्मान और अनुशासन से पेश आना चाहिए।

उन पदार्थों से बचना जो आपकी आत्मा को नुकसान पहुंचाते हैं:

1. आपका शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है। पौलुस विश्वासियों को याद दिलाता है कि उनका शरीर परमेश्वर का है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "आप पवित्र आत्मा का सम्मान तब तक नहीं कर सकते जब तक आप लापरवाही से उसके मंदिर का अनादर करते हैं।" आप अपने शरीर में क्या प्रवेश करते हैं, यह मायने रखता है। विश्वासी को शरीर को एक पवित्र स्थान मानना चाहिए, न कि उसे दुरुपयोग या उपेक्षा का पात्र।
2. आध्यात्मिक संवेदनशीलता को कम करने वाली कोई भी चीज़ खतरनाक है। ऐसे पदार्थ जो निर्णय लेने की क्षमता को कमज़ोर करते हैं, आत्म-नियंत्रण को भंग करते हैं या लत पैदा करते हैं, वे आपके स्वास्थ्य से कहीं अधिक नुकसान पहुंचा सकते हैं। वॉचमैन नी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि "जो भी चीज़ शरीर को आत्मा के विरुद्ध मज़बूत करती है, वह आध्यात्मिक जीवन के लिए खतरा बन जाती है।" जब मन भ्रमित हो जाता है और इच्छाशक्ति कमज़ोर हो जाती है, तो आध्यात्मिक जागरूकता भी प्रभावित होती है।
3. बंधन आगे चलकर कमजोरी के द्वार खोलता है। कई हानिकारक आदतें छोटी शुरुआत करती हैं लेकिन अंततः नियंत्रण स्थापित कर लेती हैं। डॉ. योंगी चो ने सिखाया कि "जो भी आपके शरीर पर हावी होता है, वह आपकी आध्यात्मिक स्वतंत्रता में बाधा डालना शुरू कर सकता है।" पवित्र आत्मा स्वतंत्रता, पवित्रता और अनुशासन की ओर ले जाती है। कोई भी चीज़ जो आपको गुलाम बनाती है, वह आत्मा के जीवन के विरुद्ध कार्य करती है।
4. विश्वासी को आत्म-संयम का अभ्यास करना चाहिए। आत्म-संयम कोई कट्टरता नहीं है। यह आध्यात्मिक परिपक्वता का फल है। चार्ल्स जी. फिन्नी ने पवित्रता और अनुशासन पर ज़ोरदार उपदेश दिया, क्योंकि वे समझते थे कि अनियंत्रित इच्छाएँ आध्यात्मिक शक्ति को कमज़ोर करती हैं। विश्वासी को उन सभी चीज़ों को ना कहना सीखना चाहिए जो शांति भंग करती हैं, स्पष्टता को कमज़ोर करती हैं या ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध होती हैं।
5. पवित्रता ईश्वर के साथ आपके संबंध की रक्षा करती है। एक स्वच्छ और अनुशासित जीवन आध्यात्मिक संवेदनशीलता को बनाए रखने में सहायक होता है। जैक कोए के पुनरुत्थान के कार्य में ईश्वर के समक्ष समर्पण और पवित्रता पर विशेष बल दिया गया था। जब आप अपने शरीर, मन और आदतों की रक्षा करते हैं, तो आप अपने आध्यात्मिक जीवन के स्वास्थ्य को बनाए रखने में भी सहायक होते हैं। ईश्वर चाहते हैं कि आप स्वतंत्र, निर्मल और उनके प्रति समर्पित रहें।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मेरा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है, और मैं ऐसी किसी भी चीज़ को अस्वीकार करता हूँ जो मेरे आध्यात्मिक जीवन को नुकसान पहुंचाती है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, धन्यवाद कि मेरा शरीर आपका है। मुझे अनुशासन और पवित्रता के मार्ग पर चलने में सहायता कीजिए। मुझे हर उस हानिकारक आदत, पदार्थ और प्रभाव से मुक्त कीजिए जो मेरे आध्यात्मिक जीवन को कमजोर करता है। मेरे शरीर को आपके सामर्थ्य के लिए एक पवित्र मंदिर बनाए रखिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

परमेश्वर की पवित्र आत्मा के माध्यम से विकास

2 कुरिन्थियों 3:18

और हम सब, जो नकाबपोश चेहरों से प्रभु की महिमा का चिंतन करते हैं, प्रभु की ओर से आने वाली निरंतर बढ़ती हुई महिमा के साथ उनकी छवि में रूपांतरित हो रहे हैं, जो कि आत्मा है।

आध्यात्मिक विकास केवल प्रयासों से नहीं होता। यह समर्पित विश्वासी में पवित्र आत्मा का कार्य है। बहुत से लोग त्वरित परिवर्तन चाहते हैं, लेकिन परमेश्वर अक्सर एक प्रक्रिया के माध्यम से कार्य करता है। मसीह में विकास का अर्थ है आंतरिक रूप से रूपांतरित होना, धीरे-धीरे उनके स्वभाव को अधिकाधिक प्रतिबिम्बित करना। पवित्र आत्मा ही विश्वासी को मसीह के स्वरूप में ढालता है।

परमेश्वर की पवित्र आत्मा के माध्यम से विकास को समझना

1. आध्यात्मिक विकास पवित्र आत्मा का कार्य है। सच्चा आध्यात्मिक विकास मात्र व्यवहार में बदलाव नहीं है। यह पवित्र आत्मा द्वारा आंतरिक रूपांतरण है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "वास्तविक विकास आत्मा में शुरू होता है और बाहर की ओर बढ़ता है।" पवित्र आत्मा विश्वासी की इच्छाओं, उद्देश्यों और चरित्र को बदल देता है। यह बाहरी धर्म से कहीं अधिक गहरा है।
2. रूपांतरण एक प्रक्रिया है। पौलुस कहता है कि हम रूपांतरित हो रहे हैं। इसका अर्थ है कि विकास निरंतर होता रहता है। वॉचमैन नी ने समझाया कि "ईसाई जीवन उस चीज़ का क्रमिक क्रियान्वयन है जो परमेश्वर ने आत्मा में पहले ही स्थापित कर दी है।" यदि विकास तुरंत न हो तो निराश न हों। परमेश्वर उन लोगों में धैर्यपूर्वक, गहराई से और पूर्णतः कार्य करता है जो उसके प्रति समर्पित होते हैं।
3. मसीह को देखना परिवर्तन लाता है। आप जिस चीज़ पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वह आपके व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "जितना अधिक आप अपना हृदय मसीह पर केंद्रित करेंगे, उतना ही पवित्र आत्मा आपके भीतर उनकी छवि का निर्माण करेगा।" आराधना, बाइबल अध्ययन और प्रार्थना में समय बिताने से आपकी निगाहें प्रभु पर टिकी रहती हैं। जैसे ही आप उन्हें देखते हैं, आत्मा आपके भीतर परिवर्तन का कार्य करती है।
4. विकास के लिए समर्पण आवश्यक है। पवित्र आत्मा अनिच्छुक हृदय पर विकास थोपता नहीं है। चार्ल्स जी. फिन्नी अक्सर विश्वासियों को पूर्ण समर्पण के लिए प्रेरित करते थे क्योंकि विकास समर्पण पर निर्भर करता है। जिन क्षेत्रों में आप समर्पण करने से इनकार करते हैं, वे ठहराव के क्षेत्र बन सकते हैं। लेकिन जब आप परमेश्वर को स्वीकार करते हैं, तो पवित्र आत्मा आप में अपना पवित्र करने का कार्य जारी रखता है।
5. विकास से प्रत्यक्ष फल मिलते हैं। आध्यात्मिक विकास आंतरिक होता है, लेकिन अंततः यह प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने लगता है। जैक कोए के उपदेशों से यह सिद्ध हुआ कि ईश्वर से प्रभावित जीवन चरित्र और सामर्थ्य दोनों में प्रकट होता है। जैसे-जैसे आपका विकास होगा, लोग आपके जीवन में अधिक शांति, ज्ञान, प्रेम, पवित्रता, धैर्य और आध्यात्मिक अधिकार देखेंगे। विकास हमेशा के लिए छिपा नहीं रहता। यह फल देता है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

पवित्र आत्मा द्वारा मेरा रूपांतरण हो रहा है, और मैं प्रतिदिन मसीह की छवि में विकसित हो रहा हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मेरे जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य के लिए आपका धन्यवाद। मुझे रूपांतरित करते रहें और मुझे यीशु मसीह के स्वरूप में ढालते रहें। जब आप मुझमें कार्य कर रहे हों, तो मुझे समर्पित, धैर्यवान और विश्वासयोग्य बने रहने में सहायता करें। मेरे जीवन में सच्ची आध्यात्मिक वृद्धि के प्रमाण दिखाई दें। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

ईश्वर का प्रकाश

1 यूहन्ना 1:5

"ईश्वर प्रकाश है; उसमें बिलकुल भी अंधकार नहीं है।"

परमेश्वर का प्रकाश उनकी पवित्रता, सत्य, शुद्धता, प्रकटीकरण और उपस्थिति का प्रतीक है। अंधकार छिपाता है, भ्रमित करता है और भ्रष्ट करता है, परन्तु परमेश्वर का प्रकाश प्रकट करता है, शुद्ध करता है और मार्गदर्शन करता है। अनेक विश्वासी परमेश्वर की शक्ति की कामना करते हैं, परन्तु यह भूल जाते हैं कि परमेश्वर प्रकाश भी हैं। उनके साथ चलना सत्य, पवित्रता और उनके समक्ष खुलेपन से चलना है। परमेश्वर का प्रकाश न केवल यह प्रकट करता है कि वे कौन हैं, बल्कि यह भी प्रकट करता है कि हमारे भीतर क्या परिवर्तन होना चाहिए।

ईश्वर के प्रकाश को समझना

1. ईश्वर का स्वरूप शुद्ध प्रकाश है। यूहन्ना हमें स्पष्ट रूप से बताते हैं कि ईश्वर प्रकाश हैं, और उनमें अंधकार का कोई स्थान नहीं है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "ईश्वर जो कुछ भी देते हैं, उसमें प्रकाश, सत्य और जीवन समाहित होता है।" इसका अर्थ है कि ईश्वर पूर्णतः शुद्ध और पूर्णतः सत्य हैं। उनमें छल, समझौता या भ्रष्टाचार नहीं है। ईश्वर को जानना दिव्य पवित्रता के संपर्क में आना है।
2. ईश्वर का प्रकाश अंधकार को उजागर करता है। जहाँ प्रकाश चमकता है, वहाँ अंधकार छिप नहीं सकता। वॉचमैन नी ने इस बात पर जोर दिया कि "ईश्वर का प्रकाश चंगा करने से पहले सच्चाई को उजागर करता है।" यही कारण है कि परिवर्तन से पहले अक्सर दोषसिद्धि आती है। जब ईश्वर का प्रकाश किसी विश्वासी के जीवन में चमकता है, तो छिपे हुए रवैये, इरादे, पाप और दुर्बलाएँ उजागर हो जाती हैं। उजागर होना अस्वीकृति नहीं है, बल्कि दया है।
3. ईश्वर का प्रकाश दिशा दिखाता है। अंधकार भ्रम पैदा करता है, लेकिन प्रकाश राह दिखाता है। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "जब आत्मा प्रकाश देती है, तो भ्रम दूर होने लगता है।" ईश्वर का प्रकाश विश्वासी को सही मार्ग देखने, सत्य को समझने और जाल से बचने में मदद करता है। कई बार, जिसे लोग स्पष्टता कहते हैं, वह वास्तव में ईश्वर के प्रकाश के किसी परिस्थिति में प्रवेश करने का ही परिणाम होता है।
4. प्रकाश में चलना ईमानदारी की मांग करता है। ईश्वर हमसे दिखावा करने को नहीं कहते। वे हमसे प्रकाश में चलने को कहते हैं। चार्ल्स जी. फिन्नी ने सिखाया कि पुनरुत्थान अक्सर वहीं से शुरू होता है जहाँ विश्वासी ईश्वर के सामने ईमानदार हो जाते हैं। प्रकाश में चलने का अर्थ है खुलापन, पश्चाताप और सुधार स्वीकार करने की तत्परता। इसका अर्थ है छिपे हुए समझौते को अस्वीकार करना और सत्य को चुनना।
5. परमेश्वर का प्रकाश संगति और पवित्रता उत्पन्न करता है। जब विश्वासी इस प्रकाश में चलते हैं, तो परमेश्वर और एक-दूसरे के साथ उनकी संगति और भी मजबूत होती जाती है। जैक कोए अक्सर पश्चाताप और दिव्य प्रकाश से भरे वातावरण में सेवा करते थे। परमेश्वर का प्रकाश केवल सच्चाई को उजागर नहीं करता, बल्कि शुद्ध करता है और पुनर्स्थापन भी प्रदान करता है। जो विश्वासी प्रकाश में बना रहता है, वह पवित्रता, स्वतंत्रता और परमेश्वर के निकट होने में वृद्धि करता है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं ईश्वर के प्रकाश में चलता हूँ, और मेरे जीवन का हर अंधकार उजागर होकर दूर हो जाता है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, आपका धन्यवाद कि आप प्रकाश हैं और आपमें कोई अंधकार नहीं है। मेरे जीवन के हर क्षेत्र में अपना प्रकाश चमकाएँ। जो परिवर्तन आवश्यक है उसे प्रकट करें, मुझे छिपे हुए अंधकार से शुद्ध करें और सत्य एवं पवित्रता के मार्ग पर मेरा मार्गदर्शन करें। मेरा जीवन प्रतिदिन आपके प्रकाश को प्रतिबिंबित करे। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

पवित्र आत्मा के फल

गलतियों 5:22-23

लेकिन पवित्र आत्मा का फल प्रेम, आनंद, शांति, धीरज, दया, भलाई, विश्वासयोग्यता, नम्रता और आत्मसंयम है...

पवित्र आत्मा केवल वरदान और सामर्थ्य ही नहीं देता, बल्कि विश्वासी के जीवन में फल भी उत्पन्न करता है। आत्मा का फल व्यक्ति के भीतर परमेश्वर के अस्तित्व का प्रत्यक्ष प्रमाण है। बहुत से लोग आध्यात्मिक अभिव्यक्तियों की तलाश करते हैं, लेकिन परमेश्वर यह भी चाहता है कि हममें मसीह जैसे गुण विकसित हों। ये फल केवल शारीरिक प्रयासों से प्राप्त नहीं होते। ये फल तब विकसित होते हैं जब विश्वासी परमेश्वर में स्थिर रहता है और पवित्र आत्मा के कार्य के प्रति समर्पित रहता है।

पवित्र आत्मा के फलों को समझना

1. पवित्र आत्मा के फल मसीह के स्वभाव को दर्शाते हैं। ये फल विश्वासी के जीवन में यीशु के चरित्र को प्रकट करते हैं। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "आध्यात्मिक परिपक्वता केवल विश्वासी के कार्यों में ही नहीं, बल्कि उसके द्वारा प्रदर्शित स्वभाव में भी देखी जाती है।" प्रेम, शांति, नम्रता और आत्म-संयम कमजोरी नहीं हैं। ये आपके भीतर कार्यरत दिव्य जीवन के प्रमाण हैं।
2. फल समर्पण से बढ़ता है, केवल प्रयास से नहीं। फल बनाया नहीं जाता, बल्कि बढ़ता है। वॉचमैन नी ने समझाया कि "ईसाई जीवन अनुकरण नहीं, बल्कि प्रदान करना है।" पवित्र आत्मा का फल तब विकसित होता है जब आप ईश्वर से जुड़े रहते हैं और प्रतिदिन पवित्र आत्मा के प्रति समर्पित होते हैं। शरीर क्षण भर के लिए अनुकरण कर सकता है, लेकिन केवल आत्मा ही स्थायी चरित्र का निर्माण कर सकती है।
3. प्रभावी मसीही जीवन के लिए पवित्र आत्मा के फल आवश्यक हैं। चरित्र के बिना शक्ति खतरनाक हो जाती है। डॉ. योंगी चो ने सिखाया कि "पवित्र आत्मा आध्यात्मिक शक्ति और आध्यात्मिक चरित्र दोनों का निर्माण करती है।" पवित्र आत्मा के फल विश्वासी को संतुलित, भरोसेमंद और परमेश्वर द्वारा उपयोग किए जाने योग्य बने रहने में मदद करते हैं। ये रिश्ते, सेवकाई, नेतृत्व और दैनिक जीवन के लिए आवश्यक हैं।
4. फल में वृद्धि के लिए समय और अनुशासन आवश्यक है। फल धीरे-धीरे विकसित होते हैं। चार्ल्स जी. फिन्नी ने सिखाया कि निरंतर समर्पण और आज्ञापालन विश्वासी में पवित्रता को गहरा करते हैं। आप एक दिन में पूरी तरह परिपक्व नहीं हो सकते, लेकिन जैसे-जैसे आप प्रार्थना, वचन, आराधना और आज्ञापालन में निरंतर बने रहते हैं, पवित्र आत्मा आप में बढ़ते हुए फल उत्पन्न करता है।
5. फल यह दर्शाता है कि पवित्र आत्मा आपके भीतर कार्यरत है। एक फलदायी जीवन परमेश्वर की महिमा करता है। जैक कोए की पीढ़ी पुनरुत्थान की शक्ति की खोज में लगी थी, लेकिन सच्चा पुनरुत्थान जीवन में स्पष्ट परिवर्तन भी लाता है। जब पवित्र आत्मा किसी व्यक्ति में कार्य करता है, तो दूसरे लोग क्रोध की जगह शांति, कठोरता की जगह दयालुता और अव्यवस्था की जगह आत्म-संयम देखने लगते हैं। फल आंतरिक जीवन का प्रमाण है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

पवित्र आत्मा मुझमें अपना फल उत्पन्न करता है, और मेरा जीवन मसीह के चरित्र को दर्शाता है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मेरे जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य के लिए आपका धन्यवाद। आत्मा के फल मुझमें भरपूर मात्रा में बढ़ें। मुझमें प्रेम, आनंद, शांति, धीरज, दया, भलाई, विश्वासयोग्यता, नम्रता और आत्म-संयम उत्पन्न करें। मेरा चरित्र प्रतिदिन यीशु मसीह को अधिकाधिक प्रतिबिंबित करे। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

आत्मा के द्वारा प्रेम की खोज करो

1 कुरिन्थियों 14:1

प्रेम के मार्ग पर चलो और पवित्र आत्मा के वरदानों, विशेषकर भविष्यवाणी करने की, की उत्सुकता से इच्छा रखो।

ईसाई जीवन में प्रेम कोई वैकल्पिक चीज़ नहीं है। यह सर्वोच्च मार्ग है। विश्वासी को न केवल प्रेम की प्रशंसा करने के लिए बुलाया गया है, बल्कि सक्रिय रूप से उसका अनुसरण करने के लिए भी। इस प्रकार का प्रेम मात्र मानवीय स्नेह या भावना नहीं है। यह पवित्र आत्मा द्वारा हृदय में उंडेला गया परमेश्वर का प्रेम है। बहुत से लोग आध्यात्मिक वरदान, प्रभाव, प्रकाशन और शक्ति की इच्छा रखते हैं, लेकिन पवित्र शास्त्र सिखाता है कि प्रेम ही आधार होना चाहिए। प्रेम के बिना, आध्यात्मिक वस्तुएँ खोखली हो जाती हैं। आत्मा द्वारा प्रेम का अनुसरण करना, परमेश्वर के हृदय का अनुसरण करना है।

आत्मा द्वारा प्रेम की खोज को समझना

1. प्रेम मसीही जीवन का सर्वोच्च मार्ग है। पौलुस विश्वासियों को प्रेम के मार्ग पर चलने का आदेश देता है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "प्रेम का मार्ग ही विश्वासी की सबसे बड़ी सुरक्षा और सबसे बड़ी गवाही है।" प्रेम कोई मामूली शिक्षा नहीं है। यह आध्यात्मिक परिपक्वता का केंद्र है। प्रेम के अभाव में, आध्यात्मिक गतिविधियाँ भी खोखली और स्वार्थी हो सकती हैं।
2. पवित्र आत्मा द्वारा परमेश्वर का प्रेम फैलाया जाता है। विश्वासी केवल अपनी शारीरिक शक्ति से प्रेम प्राप्त नहीं कर सकता। रोमियों की पुस्तक सिखाती है कि परमेश्वर का प्रेम पवित्र आत्मा द्वारा हमारे हृदयों में उंडेला जाता है। वॉचमैन नी ने समझाया कि "परमेश्वर जो आज्ञा देता है, उसकी आत्मा उसे पूरा भी करती है।" इसका अर्थ है कि पवित्र आत्मा हमें क्षमा करने, सहन करने, दया दिखाने और धैर्य बनाए रखने की शक्ति देती है, भले ही हमारा शरीर इसके विपरीत चाहता हो।
3. प्रेम आध्यात्मिक वरदानों और सेवा को सही प्रेरणा देता है। आध्यात्मिक वरदान महत्वपूर्ण हैं, लेकिन प्रेम का ही मार्गदर्शन होना चाहिए। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "प्रेम के बिना शक्ति लोगों को प्रभावित कर सकती है, लेकिन प्रेम ईश्वर के हृदय को प्रकट करता है।" सेवा, नेतृत्व, सुधार और यहाँ तक कि सत्य बोलना भी प्रेम से प्रेरित होना चाहिए। अन्यथा, जो आशीर्वाद देने के लिए होता है, वह कठोर, अहंकारी या विनाशकारी हो सकता है।
4. प्रेम की खोज में प्रतिदिन आत्म-त्याग आवश्यक है। प्रेम के लिए अक्सर त्याग की आवश्यकता होती है। चार्ल्स जी. फिन्नी ने सिखाया कि ईश्वर के साथ विश्वासी के जीवन में आत्म-त्याग आवश्यक है। प्रेम की खोज का अर्थ है कड़वाहट, अहंकार, स्वार्थी महत्वाकांक्षा, ईर्ष्या और प्रतिशोध को त्यागना। इसका अर्थ है पवित्र आत्मा को अपने भीतर मसीह के समान प्रतिक्रिया उत्पन्न करने देना। प्रेम की परीक्षा अक्सर कठिन रिश्तों और कठिन क्षणों में होती है।
5. प्रेम सच्ची आध्यात्मिकता की पहचान है। बहुत से लोग आध्यात्मिकता को वरदानों या प्रत्यक्ष गतिविधियों से मापते हैं, लेकिन पवित्र शास्त्र प्रेम से गहराई से मापता है। जैक कोए और कई पुनरुत्थानवादियों ने प्रभावशाली ढंग से सेवा की, फिर भी स्थायी प्रभाव के लिए ईश्वर और लोगों के प्रति प्रेम आवश्यक था। जब पवित्र आत्मा आपके जीवन में प्रेम उत्पन्न करता है, तो आप ईश्वर के उपयोग के लिए सुरक्षित हो जाते हैं और दूसरों के लिए आशीर्वाद बनते हैं। प्रेम वह वातावरण है जिसमें पवित्र आत्मा स्वतंत्र रूप से विचरण करता है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं आत्मा के द्वारा प्रेम की खोज करता हूँ, और ईश्वर का प्रेम मेरे हृदय, मेरे शब्दों और मेरे कार्यों का मार्गदर्शन करता है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, पवित्र आत्मा के द्वारा मेरे हृदय में अपना प्रेम उंडेलने के लिए आपका धन्यवाद। मुझे स्वार्थ, अभिमान और अपराध से ऊपर प्रेम का मार्ग सिखाइए। आपका प्रेम मेरे इरादों, मेरी वाणी और मेरे रिश्तों को निर्देशित करे। मुझे अपने प्रेम का पात्र बनाइए और मेरे जीवन में मसीह के हृदय की झलक दिखाई दे। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्प्रिट फ्लेम्स ग्लोबल"

विश्वास किस प्रकार आत्मा की मुद्रा है

इब्रानियों 11:6

और बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है, क्योंकि जो कोई उसके पास आता है उसे यह विश्वास करना चाहिए कि वह विद्यमान है और वह उन लोगों को पुरस्कृत करता है जो ईमानदारी से उसकी खोज करते हैं।

विश्वासी के जीवन में आस्था सबसे महत्वपूर्ण वास्तविकताओं में से एक है। आत्मा के क्षेत्र में, आस्था ही परमेश्वर के वादों, उनकी शक्ति और उनके मार्ग तक पहुँच प्रदान करती है। जिस प्रकार सांसारिक जगत में लेन-देन के लिए मुद्रा आवश्यक है, उसी प्रकार आध्यात्मिक जगत में कार्य करने के लिए आस्था आवश्यक है। आस्था के बिना, व्यक्ति परमेश्वर का वचन सुन सकता है, प्रार्थना कर सकता है और परिणाम की कामना कर सकता है, फिर भी आध्यात्मिक अनुभव में सीमित रह सकता है। आस्था विश्वासी को परमेश्वर की अदृश्य वास्तविकताओं से जोड़ती है और उन्हें उन चीजों से परे जाने में सक्षम बनाती है जिन्हें वे अपनी प्राकृतिक आँखों से देख सकते हैं।

यह समझना कि आस्था किस प्रकार आत्मा की मुद्रा है

1. विश्वास परमेश्वर की बातों तक पहुँच प्रदान करता है। इब्रानियों 11:6 दर्शाता है कि विश्वास के बिना कोई भी परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "विश्वास वह हाथ है जो अनुग्रह द्वारा प्रदान की गई चीजों को ग्रहण करता है।" इसका अर्थ है कि विश्वास ही वह तरीका है जिससे हम परमेश्वर द्वारा पहले से उपलब्ध कराई गई चीजों को ग्रहण करते हैं। आत्मिक जगत में, पहुँच मानवीय प्रयासों, पृष्ठभूमि या भावनाओं पर आधारित नहीं होती, बल्कि परमेश्वर पर सच्चे विश्वास पर आधारित होती है। विश्वास ही दिव्य संभावनाओं के द्वार खोलता है।
2. आस्था आपको अदृश्य जगत से जोड़ती है। आस्था हमारी इंद्रियों की पहुँच से परे काम करती है। वॉचमैन नी ने समझाया कि "आत्मा ईश्वर से प्राप्त ज्ञान से जीवित रहती है, न कि बाहरी दिखावे से।" यही कारण है कि आध्यात्मिक मामलों में आस्था आवश्यक है। यह विश्वासी को विपरीत परिस्थितियों में भी ईश्वर के वचन पर दृढ़ रहने की शक्ति देती है। आस्था अदृश्य के बारे में आशा और विश्वास को बल प्रदान करती है।
3. पवित्र आत्मा विश्वास का जवाब देती है। पवित्र आत्मा वहीं कार्य करती है जहाँ परमेश्वर के वचन पर भरोसा होता है। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "विश्वास एक विश्वासी के जीवन में आत्मा के कार्य के लिए जगह बनाता है।" भय, संदेह और अविश्वास हृदय को अवरुद्ध कर सकते हैं, लेकिन विश्वास परमेश्वर के कार्य का स्वागत करता है। जब एक विश्वासी विश्वास के साथ जवाब देता है, तो आत्मा उसे परमेश्वर की शक्ति, शांति और मार्गदर्शन के अधिक गहन अनुभव की ओर ले जाती है।
4. आस्था को पोषित और मजबूत करना आवश्यक है। आस्था का कमजोर रहना उचित नहीं है। इसे बढ़ाना चाहिए। चार्ल्स जी. फिन्नी ने सिखाया कि "सत्य का पोषण करने और आज्ञापालन में कार्य करने से आस्था मजबूत होती है।" जितना अधिक आप वचन सुनेंगे, उस पर मनन करेंगे, उसके लिए प्रार्थना करेंगे और उस पर अमल करेंगे, उतनी ही आपकी आस्था मजबूत होगी। कमजोर आस्था संकोच उत्पन्न करती है, जबकि मजबूत आस्था आध्यात्मिक साहस उत्पन्न करती है।
5. विश्वास विजयमय जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है। विश्वास से जीने वाला विश्वासी भय, दिखावे या क्षणिक असफलताओं से प्रभावित नहीं होता। जैक कोए ने दृढ़ विश्वास के साथ सेवा की क्योंकि उनका मानना था कि ईश्वर विश्वास का सम्मान करता है। विश्वास कठिन समय में विश्वासी को स्थिर रखता है और ईश्वर से सहायता की अपेक्षा बनाए रखता है। यह अंधा आशावाद नहीं है। यह ईश्वर के स्वरूप और वादे पर अटूट विश्वास है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं आस्था के सहारे जीता हूँ, और मेरी आत्मा को वह सब ग्रहण करने की शक्ति मिलती है जो परमेश्वर ने मेरे लिए तैयार किया है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, विश्वास के वरदान के लिए धन्यवाद। मेरी सहायता कीजिए कि मैं आप पर गहराई से भरोसा कर सकूँ और जो कुछ मैं देख या महसूस करूँ, उससे ऊपर आपके वचन के अनुसार जीवन व्यतीत करूँ। प्रतिदिन मेरे विश्वास को मजबूत कीजिए और मुझे आत्मा के क्षेत्र में आत्मविश्वास से चलना सिखाइए। मेरे जीवन को अटूट विश्वास के द्वारा आपको प्रसन्न करने वाला बनाइए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

स्वर्गारोहण होना और तैयार रहना

1 थिस्सलनीकियों 4:16-17

क्योंकि प्रभु स्वयं स्वर्ग से उतरेंगे... और मसीह में मरे हुए लोग पहले जी उठेंगे। उसके बाद, हम जो अभी जीवित हैं और बचे हुए हैं, उनके साथ बादलों में उठा लिए जाएंगे...

प्रभु यीशु मसीह का आगमन एक ऐसा सत्य है जिसे हर विश्वासी को गंभीरता से लेना चाहिए। प्रभु यीशु मसीह के आगमन का उद्देश्य परमेश्वर के बच्चों में भय उत्पन्न करना नहीं है, बल्कि तत्परता, पवित्रता और आशा उत्पन्न करना है। बहुत से लोग अंत समय के बारे में जिज्ञासा से बात करते हैं, लेकिन परमेश्वर चाहता है कि विश्वासी तैयार रहें। प्रभु के आगमन के लिए तैयार रहने का अर्थ है विश्वास में जीना, पवित्रता के मार्ग पर चलना, आत्मिक रूप से जागृत रहना और अपने हृदय को मसीह के प्रति समर्पित रखना। समझदार विश्वासी इस सत्य को अनदेखा नहीं करता, बल्कि इसे आत्मिक गंभीरता के आह्वान के रूप में उपयोग करता है।

स्वर्गारोहण को समझना और उसके लिए तैयार रहना

1. मसीह का पुनरागमन एक निश्चित प्रतिज्ञा है। रेप्चर (प्रभु द्वारा स्वर्गारोहण) मनुष्य द्वारा गढ़ा गया विचार नहीं है। यह पवित्रशास्त्र में निहित है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "प्रभु का आगमन विश्वासी की धन्य आशा का एक हिस्सा है।" यीशु पुनरागमन करेंगे, और कलीसिया को इस सत्य के प्रति सचेत रहना चाहिए। जब विश्वासी उनके पुनरागमन को भूल जाते हैं, तो वे लापरवाह हो सकते हैं और वर्तमान संसार से अत्यधिक जुड़ सकते हैं।
2. अटकलों से ज़्यादा तैयारी ज़रूरी है। बहुत से लोग समय-सीमा पर बहस करने में समय बिताते हैं, लेकिन अपनी तैयारी को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। वॉचमैन नी ने ज़ोर देकर कहा कि "प्रभु के आगमन से पहले शुद्धि होनी चाहिए, न कि केवल तर्क-वितर्क।" बात केवल भविष्यवाणियों पर चर्चा करने की नहीं है, बल्कि ऐसे जीवन जीने की है जो मसीह का सम्मान करें। तैयारी दैनिक आज्ञापालन में देखी जाती है, न कि केवल भविष्यवाणियों के ज्ञान में।
3. पवित्रता तैयारी का हिस्सा है। विश्वासी को प्रभु के आगमन की प्रतीक्षा करने का दावा करते हुए समझौतावादी जीवन नहीं जीना चाहिए। चार्ल्स जी. फिन्नी ने पश्चात्ताप और पवित्र जीवन का प्रबल प्रचार किया क्योंकि वे अनंत काल की गंभीरता को समझते थे। एक तैयार विश्वासी वह है जो पाप से शीघ्र निपटता है, प्रकाश में चलता है और परमेश्वर के समक्ष विश्वासयोग्य पाए जाने की इच्छा रखता है।
4. पवित्र आत्मा विश्वासी को जागृत रहने में सहायता करती है। तत्परता केवल भय या मानवीय तनाव से प्राप्त नहीं होती। पवित्र आत्मा विश्वासी को आध्यात्मिक रूप से जागृत रखती है। डॉ. योंगी घो ने सिखाया कि "पवित्र आत्मा के साथ घनिष्ठ संबंध हृदय को सतर्क और आशावान बनाए रखता है।" प्रार्थनाहीन और लापरवाह जीवन विश्वासी को सुस्त बना देता है, परन्तु परमेश्वर के साथ संगति आत्मा को सजग रखती है।
5. मसीह के आगमन की आशा दृढ़ जीवन को जन्म देती है। स्वर्गारोहण की सच्चाई का उद्देश्य विश्वासियों को निष्क्रिय बनाना नहीं, बल्कि उन्हें विश्वासयोग्य बनाना है। जैक कोए की पीढ़ी ने तत्परता से जीवन व्यतीत किया क्योंकि उनका मानना था कि अनंत जीवन निकट है। जब आप तैयार होकर जीते हैं, तो आप प्रार्थना के प्रति गंभीर हो जाते हैं, वचन के प्रति गंभीर हो जाते हैं, पवित्रता के प्रति गंभीर हो जाते हैं और आत्माओं को जीतने के प्रति गंभीर हो जाते हैं। उनके आगमन की आशा आपके वर्तमान जीवन को आकार देनी चाहिए।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं प्रभु के आगमन की प्रतीक्षा में जीता हूँ, और मेरा जीवन पवित्रता और विश्वास में मसीह पर केंद्रित है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मसीह के पुनरागमन के वादे के लिए आपका धन्यवाद। मुझे तैयार, सतर्क और विश्वासयोग्य जीवन जीने में सहायता कीजिए। मुझे समझौता, आध्यात्मिक निष्क्रियता और भटकाव से बचाए रखिए। मेरा जीवन पवित्रता, भक्ति और प्रभु के आगमन की तत्परता से परिपूर्ण हो। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

धोखे की भावना

2 थिस्सलनीकियों 2:9-10

"अधर्मी का आगमन शैतान के कार्य करने के तरीके के अनुसार होगा। वह झूठ को बढ़ावा देने वाले चमत्कारों और आश्चर्यों के माध्यम से शक्ति प्रदर्शन के सभी प्रकार का प्रयोग करेगा..."

अंतिम दिनों और मसीही जीवन के खतरों में से एक छल है। छल खतरनाक है क्योंकि यह देखने में तो विश्वसनीय लग सकता है, लेकिन व्यक्ति को सत्य से दूर ले जा सकता है। हर वह चीज़ जो आध्यात्मिक, शक्तिशाली या आकर्षक प्रतीत होती है, वह परमेश्वर की ओर से नहीं होती। छल की आत्मा झूठ, भ्रम, झूठे दिखावे, झूठी शिक्षाओं और सत्य के सूक्ष्म विकृति के माध्यम से काम करती है। इसीलिए विश्वासी को परमेश्वर के वचन में दृढ़ रहना चाहिए और पवित्र आत्मा के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए।

छल की भावना को समझना

1. छल अक्सर सत्य के निकट प्रतीत होता है। शत्रु केवल स्पष्ट रूप से असत्य बातों के माध्यम से ही धोखा नहीं देता। वह अक्सर सत्य को झुट्टे के साथ मिला देता है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "सबसे खतरनाक छल वह है जो लगभग सही प्रतीत होता है।" यही कारण है कि विश्वासियों को विवेक में वृद्धि करनी चाहिए। कोई भी ऐसी बात जो आपको परमेश्वर के वचन के पूर्ण सत्य से दूर ले जाती है, चाहे वह सूक्ष्म रूप से ही क्यों न हो, उसकी जाँच अवश्य की जानी चाहिए।

2. चमत्कार और अद्भुत कार्य मात्र सत्य का प्रमाण नहीं हैं। पौलुस चेतावनी देता है कि छलकारी शक्ति झूठ के साथ आ सकती है। वॉचमैन नी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि "आध्यात्मिक अभिव्यक्ति ईश्वरीय स्वीकृति के समान नहीं है।" बहुत से लोग प्रभावशाली दिखने वाली चीज़ों से आकर्षित हो जाते हैं, लेकिन विश्वासी को यह स्वयं से पूछना चाहिए कि क्या वह चीज़ पवित्रशास्त्र और मसीह के चरित्र के अनुरूप है। सत्य के बिना शक्ति भी गुमराह कर सकती है।

3. परमेश्वर का वचन छल से बचाता है। पवित्रशास्त्र में दृढ़ विश्वास रखने वाले विश्वासी को गुमराह करना कठिन होता है। चार्ल्स जी. फिन्नी ने सिखाया कि "जहाँ सत्य की उपेक्षा होती है, वहाँ भ्रम पनपता है।" जब परमेश्वर का वचन आपके हृदय में गहराई से बसा होता है, तो झूठ को पहचानना आसान हो जाता है। सतही विश्वासी आसानी से विचलित हो जाता है, परन्तु सत्य में दृढ़ विश्वास रखने वाला विश्वासी स्थिर हो जाता है।

4. पवित्र आत्मा आंतरिक चेतावनी देती है: पवित्र आत्मा केवल मार्गदर्शन ही नहीं करती, बल्कि चेतावनी भी देती है। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "जब कुछ ठीक नहीं होता, तो आत्मा भीतर बेचैनी पैदा करती है।" कभी-कभी विवेक बेचैनी, आंतरिक सावधानी या गहरी दृढ़ विश्वास के रूप में आता है। विश्वासी को इन आंतरिक चेतावनियों को अनदेखा न करना सीखना चाहिए।

5. विनम्र और प्रार्थनापूर्ण जीवन छल को कम करता है। अहंकार छल को आसान बना देता है। विनम्र व्यक्ति परमेश्वर के समक्ष सीखने के लिए हमेशा तैयार रहता है। जैक कोए के पुनरुत्थान के माहौल ने अक्सर लोगों को परमेश्वर के समक्ष समर्पण और ईमानदारी की ओर प्रेरित किया। प्रार्थना आत्मा को सचेत रखती है। विनम्रता हृदय को सुधार के लिए खुला रखती है। ये दोनों मिलकर विश्वासी को छल से बचाते हैं।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं परमेश्वर के वचन में दृढ़ हूँ, और पवित्र आत्मा मुझे हर प्रकार के धोखे से बचाती है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, आपके सत्य के लिए धन्यवाद। मुझे छल की हर आत्मा और शत्रु के हर झूठ से बचाए रख। मुझे आपके वचन में दृढ़ रहने और पवित्र आत्मा की चेतावनी के प्रति संवेदनशील रहने में सहायता कर। मेरे हृदय को विनम्र, सच्चा और आपके सत्य के साथ पूर्णतः जुड़ा रहने दे। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

आध्यात्मिक हमलों का मुकाबला कैसे करें

इफिसियों 6:11

"परमेश्वर के पूरे कवच को धारण करो, ताकि तुम शैतान की योजनाओं के विरुद्ध डटकर खड़े हो सको।"

कई विश्वासियों के जीवन में आध्यात्मिक हमले एक वास्तविकता हैं। ये हमले भय, भ्रम, प्रलोभन, हतोत्साह, उत्पीड़न, आरोप या तीव्र प्रतिरोध के रूप में आ सकते हैं। विश्वासी को यह समझना चाहिए कि आध्यात्मिक हमलों पर घबराहट या शारीरिक प्रतिक्रिया से विजय नहीं पाई जा सकती, बल्कि परमेश्वर द्वारा दिए गए आध्यात्मिक हथियारों से ही विजय प्राप्त की जा सकती है। विजय तब मिलती है जब विश्वासी मसीह में स्थिर रहता है, वचन का उपयोग करता है, प्रार्थना में लीन रहता है और शत्रु के सामने आत्मसमर्पण करने से इनकार करता है।

आध्यात्मिक हमलों का मुकाबला कैसे करें, यह समझना

1. आपको यह समझना होगा कि लड़ाई आध्यात्मिक है। हर संघर्ष केवल स्वाभाविक नहीं होता। कुछ लड़ाइयों की जड़ें आध्यात्मिक होती हैं। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "आप सांसारिक तरीकों से आध्यात्मिक लड़ाइयों को प्रभावी ढंग से नहीं लड़ सकते।" पहला कदम यह समझना है कि विश्वासी को आध्यात्मिक रूप से प्रतिक्रिया देनी चाहिए। क्रोध, घबराहट और भ्रम केवल कमजोरी बढ़ाते हैं। आध्यात्मिक हमलों के लिए आध्यात्मिक प्रतिक्रिया आवश्यक है।
2. परमेश्वर का कवच प्रतिदिन धारण करना आवश्यक है। पौलुस विश्वासियों को परमेश्वर का पूर्ण कवच धारण करने की शिक्षा देता है। इसका अर्थ है सत्य, धार्मिकता, शांति, विश्वास, उद्धार और वचन में जीवन व्यतीत करना। वॉचमैन नी ने समझाया कि "विजय तभी बनी रहती है जब हम मसीह द्वारा प्रदान की गई चीजों में स्थिर रहते हैं।" यह कवच केवल दिखावटी नहीं है, बल्कि आवश्यक है। जो विश्वासी आध्यात्मिक अनुशासन की उपेक्षा करता है, वह अधिक असुरक्षित हो जाता है।
3. परमेश्वर का वचन प्रतिरोध का हथियार है। यीशु ने वचन के द्वारा शत्रु का प्रतिरोध किया। चार्ल्स जी. फिन्नी ने सिखाया कि सत्य में शत्रु के प्रभाव को तोड़ने की शक्ति है। पवित्रशास्त्र को पढ़ना, उस पर मनन करना और उस पर दृढ़ रहना विश्वासी को युद्ध में मजबूत बनाता है। शत्रु भ्रम और झूठ में पनपता है, लेकिन वचन स्पष्टता और अधिकार प्रदान करता है।
4. प्रार्थना संघर्ष में विश्वासी को शक्ति प्रदान करती है। प्रार्थना अंतिम उपाय नहीं है, बल्कि एक हथियार है। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "प्रार्थना विश्वासी को ईश्वरीय सहायता से जोड़ती है।" प्रार्थना करने वाला विश्वासी असहाय नहीं होता। प्रार्थना के द्वारा शक्ति का नवीनीकरण होता है, रणनीति प्राप्त होती है, शांति बहाल होती है और शत्रु के दबाव का प्रतिरोध किया जाता है। प्रार्थना आक्रमण के दौरान आत्मा को टूटने से बचाती है।
5. दृढ़ विश्वास विजय दिलाता है। शत्रु अक्सर परमेश्वर पर विश्वास को डगमगाने के लिए हमला करता है। जैक कोए ने साहसपूर्वक प्रचार किया कि विश्वासियों को भय के आगे नहीं झुकना चाहिए। जब हमले तीव्र होते हैं, तब भी विश्वास ही आपको डटे रहने की शक्ति देता है। दबाव आने पर भी, एक विश्वासी को मसीह में दृढ़ रहना चाहिए, शत्रु को समझौता करने का अवसर नहीं देना चाहिए। मसीह में विजय अनिश्चित नहीं है, बल्कि पहले से ही निश्चित है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं मसीह में दृढ़ विश्वास रखता हूँ, परमेश्वर द्वारा पूर्णतः सशक्त हूँ, और मुझे पर होने वाला हर आध्यात्मिक हमला उनकी शक्ति से पराजित होता है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मसीह में आपने मुझे जो विजय दी है, उसके लिए आपका धन्यवाद। मुझे हर आत्मिक आक्रमण के विरुद्ध दृढ़ रहना सिखाइए। मुझे अपने कवच, अपने वचन और अपनी आत्मा से बल दीजिए। भय, भ्रम और उत्पीड़न को अपना प्रभाव खोने दीजिए, और मुझे साहस और शांति के साथ चलने दीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

जब आप जादू टोने के शिकार हों

यशायाह 54:17

"तुम्हारे विरुद्ध बनाया गया कोई भी हथियार कारगर नहीं होगा..."

कई बार विश्वासी खुद को दमन, निशाना बनाए जाने या गहरी पीड़ा में पाते हैं, और ये अनुभव आध्यात्मिक प्रतीत होते हैं। पवित्र शास्त्र स्पष्ट करता है कि अंधकार के कार्य वास्तविक हैं, लेकिन यह भी स्पष्ट करता है कि यीशु मसीह का अधिकार उनसे कहीं अधिक महान है। विश्वासी को कभी भी भय, घबराहट या अंधविश्वास से प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए। इसके बजाय, उन्हें मसीह में स्थिर रहना चाहिए, अंधकार के हर कार्य को अस्वीकार करना चाहिए, परमेश्वर के सत्य में दृढ़ रहना चाहिए और प्रार्थना, विश्वास और आध्यात्मिक सहायता की शरण लेनी चाहिए। अंधकार की कोई भी शक्ति परमेश्वर की शक्ति से बड़ी नहीं है।

जादू टोने का शिकार होने पर क्या करना चाहिए, यह समझना

1. भय को अपने हृदय पर हावी न होने दें। भय मन में अंधकार को अत्यधिक स्थान देता है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "विश्वासी की पहली प्रतिक्रिया विश्वास होनी चाहिए, भय नहीं।" यदि कोई व्यक्ति यह मानता है कि वह आध्यात्मिक हमले या प्रभाव में है, तो भय केवल उसकी आध्यात्मिक स्थिति को कमजोर करेगा। पहला कदम यह याद रखना है कि आप मसीह में कौन हैं और भय के आगे अपनी शांति को न झुकाएं।
2. मसीह का अधिकार अंधकार के हर कार्य से कहीं अधिक है। यीशु की शक्ति हर बुराई से ऊपर है। वॉचमैन नी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि "विश्वासी क्रूस की विजय में स्थिर है, न कि अपनी व्यक्तिगत शक्ति में।" मसीह के क्रूस ने अंधकार के अधिकार को तोड़ दिया। विश्वासी को इस पूर्ण कार्य पर स्थिर रहना चाहिए, न कि अंधविश्वास या मानवीय सूत्रों पर। यीशु हर आध्यात्मिक विरोध पर प्रभु हैं।
3. प्रार्थना और वचन को अपना आधार बनाएं। उत्पीड़न का सामना कर रहे विश्वासी को पवित्रशास्त्र और प्रार्थना में दृढ़ रहना चाहिए। चार्ल्स जी. फिन्नी ने सिखाया कि सच्ची प्रार्थना में आध्यात्मिक बोझ और विरोध को दूर करने की शक्ति होती है। परमेश्वर के वचन को बोलना, सत्य की घोषणा करना और विश्वास के साथ प्रार्थना करना आत्मा को स्थिर करने में सहायक होता है। वचन आत्मविश्वास बढ़ाता है और प्रार्थना ईश्वरीय हस्तक्षेप को आमंत्रित करती है।
4. आध्यात्मिक रूप से स्वयं को अलग-थलग न करें: जब आध्यात्मिक उत्पीड़न तीव्र हो, तो विश्वासियों को अलग-थलग नहीं रहना चाहिए। डॉ. योंगी चो ने सिखाया कि संगति और प्रार्थना में एकमत होने से विश्वासी को संघर्ष में शक्ति मिलती है। विश्वासनीय, परिपक्व विश्वासी और पादरी का सहयोग प्रोत्साहन, विवेक और प्रार्थना प्रदान करने में सहायक हो सकते हैं। अलगाव अक्सर भय और भ्रम को और भी बढ़ा देता है।
5. पवित्रता, शांति और ईश्वर में विश्वास के साथ जीवन व्यतीत करें। अंधकार वहीं प्रवेश करता है जहाँ समझौता, भय और अव्यवस्था होती है। जैक कोए के पुनरुत्थान संबंधी उपदेश अक्सर विश्वासियों को समर्पण, पवित्रता और ईश्वर में अटूट विश्वास रखने के लिए प्रेरित करते थे। एक स्वच्छ और समर्पित जीवन विश्वासी को भयभीत नहीं करता, बल्कि उन्हें ईश्वर के संरक्षण में विश्वास दिलाता है। विश्वासी को तंत्र-मंत्र और अंधविश्वास से दूर रहना चाहिए और मसीह की शांति में दृढ़ रहना चाहिए।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं यीशु मसीह का हूँ, और अंधकार का कोई भी कार्य मेरे जीवन के विरुद्ध प्रबल नहीं होगा।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मैं मसीह में सुरक्षित हूँ, इसके लिए आपका धन्यवाद। मैं यीशु के नाम में अंधकार के हर कार्य, हर भय और हर प्रकार के आत्मिक उत्पीड़न को अस्वीकार करता हूँ। मुझे अपनी शांति से ढक लें, मेरे विश्वास को मजबूत करें और मुझे अपने सत्य में स्थापित करें। मेरे विरुद्ध की गई हर बुरी योजना विफल हो जाए और मेरे जीवन में आपकी विजय प्रकट हो। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना आपके आध्यात्मिक जीवन को कैसे उन्नत करता है

1 कुरिन्थियों 14:4

"जो कोई भी किसी अन्य भाषा में बोलता है, वह स्वयं को लाभान्वित करता है..."

अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना परमेश्वर द्वारा विश्वासी को दिए गए अनमोल उपहारों में से एक है। यह निरर्थक वाणी नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा द्वारा सशक्त आध्यात्मिक अभिव्यक्ति है। कई विश्वासी जो नियमित रूप से अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, गवाही देते हैं कि इससे उनका आंतरिक मन मजबूत होता है, उनकी आध्यात्मिक संवेदनशीलता बढ़ती है, उनका प्रार्थना जीवन गहरा होता है और परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति उनकी जागरूकता बढ़ती है। अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने से विश्वासी को प्राकृतिक सीमाओं से परे जाकर गहरे आध्यात्मिक मिलन में प्रवेश करने में मदद मिलती है।

यह समझना कि अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना आपके आध्यात्मिक जीवन को कैसे उन्नत करता है

1. अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना आंतरिक व्यक्तित्व का निर्माण करता है। पौलुस कहता है कि जो व्यक्ति अन्य भाषाओं में बोलता है, वह स्वयं को मजबूत करता है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "आत्मा में प्रार्थना करने से विश्वासी आंतरिक रूप से मजबूत होता है।" यह निर्माण आध्यात्मिक मजबूती है। जिस प्रकार शरीर को पोषण की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार आत्मा को भी मजबूती की आवश्यकता होती है। अन्य भाषाओं में बोलना आध्यात्मिक सहनशक्ति, सतर्कता और क्षमता को बढ़ाने में सहायक होता है।
2. यह आपको स्वाभाविक समझ से परे प्रार्थना करने में मदद करता है। कई बार मन को प्रार्थना करने का सही तरीका नहीं सूझता। वॉचमैन नी ने समझाया कि "आत्मा उन तरीकों से ईश्वर तक पहुँच सकती है जिन्हें मन पूरी तरह से समझ नहीं पाता।" अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने से विश्वासी आत्मा से प्रार्थना कर पाता है। यह समझ का विकल्प नहीं है, बल्कि प्रार्थना जीवन में एक गहरा आयाम जोड़ता है।
3. अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने से आध्यात्मिक संवेदनशीलता बढ़ती है। जो विश्वासी नियमित रूप से अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, वे अक्सर परमेश्वर की उपस्थिति और प्रेरणाओं के प्रति अधिक जागरूक हो जाते हैं। डॉ. योंगमी चो ने सिखाया कि "आत्मा में लंबे समय तक प्रार्थना करने से आंतरिक जीवन में निखार आता है।" जैसे-जैसे आत्मा अधिक सक्रिय होती है, विश्वासी अक्सर अधिक स्पष्टता, अधिक शांति और पवित्र आत्मा के प्रति अधिक मजबूत संवेदनशीलता का अनुभव करते हैं।
4. यह आध्यात्मिक उत्साह को बनाए रखने में सहायक है। उपेक्षित प्रार्थना जीवन अक्सर आध्यात्मिक शुष्कता का कारण बनता है। चार्ल्स जी. फिन्नी ने विश्वासियों के लिए परमेश्वर के समक्ष आध्यात्मिक रूप से जीवंत और उत्साही बने रहने की आवश्यकता को समझा था। अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना आंतरिक जीवन को प्रज्वलित रखने में सहायक होता है। यह विश्वासी को आध्यात्मिक रूप से सक्रिय, प्रार्थनाशील और परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी बनाए रखने में मदद करता है।
5. अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने से परमेश्वर के साथ संगति गहरी होती है। अन्य भाषाएँ केवल शक्ति के लिए नहीं हैं, बल्कि परमेश्वर के साथ संगति का साधन भी हैं। जैक कोए के पुनरुत्थान के दौर में पवित्र आत्मा की सेवकाई और विश्वासी का परमेश्वर के साथ गहरा संवाद अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता था। जब आप ईमानदारी से और नियमित रूप से अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, तो आपका आध्यात्मिक जीवन गहरा, अधिक संवेदनशील और पवित्र आत्मा के प्रति अधिक समर्पित हो जाता है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

जब मैं आत्मा में प्रार्थना करता हूँ, तो मेरा अंतर्मन मजबूत होता है और ईश्वर के साथ मेरा संबंध गहरा होता जाता है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, पवित्र आत्मा के वरदान और आत्मा में प्रार्थना करने के विशेषाधिकार के लिए आपका धन्यवाद। मेरे अंतर्मन को शक्ति प्रदान करें और मेरी प्रार्थना को गहरा करें। मेरी आत्मा को आपके प्रति अधिक संवेदनशील बनाएं और आपके साथ मेरा संबंध प्रतिदिन और मजबूत होता जाए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

मूर्ति पूजा के संकेत

निर्गमन 20:3

"मेरे सामने तुम्हारे पास कोई दूसरा ईश्वर नहीं होगा।"

मूर्तिपूजा केवल प्रतिमाओं और नक्काशीदार मूर्तियों तक ही सीमित नहीं है। मूल रूप से, मूर्तिपूजा वह सब कुछ है जो किसी व्यक्ति के हृदय में ईश्वर का स्थान ले लेता है। यह तब होता है जब कोई व्यक्ति प्रभु के अलावा किसी और चीज को अपनी परम भक्ति, विश्वास, भय, इच्छा या निर्भरता देता है। यह एक गंभीर मुद्दा है क्योंकि ईश्वर विश्वासी के जीवन में सर्वोपरि स्थान चाहता है। मूर्तिपूजा सूक्ष्म हो सकती है, और कई लोग इसे जड़ पकड़ लेने पर पहचान नहीं पाते। इसीलिए विश्वासी को अपने हृदय की गहन जांच करनी चाहिए।

मूर्ति पूजा के संकेतों को समझना

1. ईश्वर के स्थान पर मूर्ति का आ जाना: आपके हृदय में जो भी सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लेता है, वह मूर्ति बन सकता है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "जो भी आपकी भक्ति को नियंत्रित करता है, वह आपके जीवन को भी नियंत्रित करने लगता है।" केवल ईश्वर ही परम निष्ठा और आराधना के योग्य हैं। जब कोई और चीज उनका स्थान लेने लगती है, तो हृदय मूर्तिपूजा की ओर बढ़ने लगता है।
2. सृष्टि की वस्तुओं पर अत्यधिक निर्भरता एक चेतावनी का संकेत है। वॉचमैन नी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि मनुष्य का हृदय अस्वस्थ तरीके से सृष्टि की वस्तुओं से आसक्त हो सकता है। धन, रिश्ते, पद, संपत्ति, शक्ति, प्रतिष्ठा और यहाँ तक कि व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा भी मूर्ति बन सकती हैं यदि वे ईश्वर से अलग सुरक्षा का स्रोत बन जाएँ। जब विश्वास ईश्वर से हटकर सृष्टि की वस्तुओं पर आ जाता है, तो मूर्तिपूजा का जन्म होने लगता है।
3. मूर्तिपूजा अक्सर गलत भय या जुनून के माध्यम से प्रकट होती है। कोई व्यक्ति जिस बात से अत्यधिक भयभीत होता है या जिसके पीछे जुनून से भागता है, वह उसके हृदय की स्थिति को प्रकट कर सकता है। चार्ल्स जी. फिन्नी ने सिखाया कि हृदय हमेशा अपने सच्चे प्रेम के स्रोत को प्रकट करता है। यदि कोई व्यक्ति ईश्वर को दुखी करने के भय से अधिक किसी चीज के खोने के भय से ग्रस्त है, तो यह मूर्तिपूजा को उजागर कर सकता है।
4. मूर्तिपूजा धर्म की आड़ में छिप सकती है। कोई व्यक्ति धार्मिक दिख सकता है, लेकिन उसके हृदय में मूर्तिपूजा की भावना हो सकती है। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "बाहरी रूप आंतरिक समर्पण का स्थान नहीं ले सकते।" कभी-कभी लोग ईश्वर से अधिक विधियों, व्यक्तित्वों, उपाधियों या परंपराओं पर विश्वास करते हैं। इसीलिए प्रभु के समक्ष सच्चे मन से आत्म-परीक्षण करना आवश्यक है।
5. सच्ची उपासना परमेश्वर को उनके उचित स्थान पर लौटाती है। मूर्तिपूजा का समाधान केवल बाहरी त्याग नहीं, बल्कि आंतरिक समर्पण है। जैक कोए ने परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण के बारे में ज़ोरदार उपदेश दिया। जब हृदय सच्चे मन से प्रभु की ओर लौटता है, तो मूर्तियाँ अपना प्रभाव खो देती हैं। उपासना, पश्चाताप, आज्ञापालन और परमेश्वर के प्रति प्रेम विश्वासी को सही मार्ग पर लाते हैं। परमेश्वर न केवल आपके जीवन का हिस्सा होना चाहिए, बल्कि सर्वोपरि होना चाहिए।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मेरे जीवन में सर्वोपरि ईश्वर ही हैं, और मेरा हृदय पूर्णतः उन्हीं का है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मेरे हृदय की जांच करें और मेरे भीतर जो कुछ भी आपका स्थान ले चुका है, उसे प्रकट करें। हर मूर्ति, हर अस्वस्थ आसक्ति और हर झूठे भरोसे को दूर करें। मुझे आत्मा और सच्चाई से आपकी उपासना करना सिखाएं, और मेरे हृदय को पूरी तरह से केवल आप ही के प्रति समर्पित रहने दें। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ।
आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

उनकी दिव्य प्रकृति में भागीदार होने के नाते

2 पतरस 1:4

"इनके माध्यम से उन्होंने हमें अपने बहुत बड़े और अनमोल वादे दिए हैं, ताकि इनके माध्यम से आप दिव्य स्वभाव में भागीदार बन सकें..."

मसीही जीवन की सबसे शक्तिशाली सच्चाइयों में से एक यह है कि विश्वासी को न केवल क्षमा मिलती है बल्कि उसका रूपांतरण भी होता है। मसीह के द्वारा हम उनकी दिव्य प्रकृति के भागीदार बनते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम ईश्वर बन जाते हैं, बल्कि इसका अर्थ यह है कि उनका जीवन, उनका चरित्र और उनका स्वभाव हमारी आत्मा में समाहित हो जाता है। अनेक विश्वासी इस वास्तविकता से अनभिज्ञ होने के कारण ईश्वर द्वारा उपलब्ध कराई गई क्षमता से बहुत नीचे जीवन व्यतीत करते हैं। उनकी दिव्य प्रकृति के भागीदार होने का अर्थ है भ्रष्टाचार से परे, सीमाओं से परे जीवन जीना और मसीह के जीवन को प्रतिबिंबित करना।

उनकी दिव्य प्रकृति में भागीदार होने को समझना

1. ईश्वरीय स्वभाव मसीह के द्वारा प्रदत्त है। यह स्वभाव अर्जित नहीं किया जाता, बल्कि प्राप्त होता है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "जब आप पुनर्जन्म लेते हैं, तो आप अपनी आत्मा में ईश्वर का स्वभाव प्राप्त करते हैं।" इसका अर्थ है कि धार्मिकता, पवित्रता और आध्यात्मिक जीवन आप में स्थापित हो जाते हैं। विश्वासी को अपने अतीत की पहचान से नहीं, बल्कि इस वास्तविकता से जीना सीखना चाहिए।
2. नया स्वभाव आपको भ्रष्टाचार से अलग करता है। पतरस सिखाता है कि यह स्वभाव हमें संसार के भ्रष्टाचार से बचने में मदद करता है। वॉचमैन नी ने समझाया कि "हमारे भीतर परमेश्वर का जीवन पाप के पुराने स्वभाव का विरोध करता है।" आप जितना अधिक इस दिव्य स्वभाव के प्रति समर्पित होंगे, उतना ही पाप आप पर अपनी पकड़ खोता जाएगा।
3. परमेश्वर के वादे इस स्वभाव को सक्रिय करते हैं। परमेश्वर का वचन इस स्वभाव को प्रकट करने में सहायक होता है। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "जब आप परमेश्वर के वादों पर विश्वास करते हैं और उन पर अमल करते हैं, तो दिव्य जीवन प्रकट होने लगता है।" परमेश्वर के वादे न केवल सांत्वना देते हैं, बल्कि सक्रिय भी करते हैं।
4. इस स्वभाव का विकास होना आवश्यक है। यद्यपि यह तुरंत प्राप्त होता है, फिर भी इसका विकास होना चाहिए। चार्ल्स जी. फिन्नी ने इस बात पर जोर दिया कि विश्वासियों को अपने भीतर ईश्वर के कार्य में सहयोग करना चाहिए। यह विकास आशाकारिता, वचन, प्रार्थना और समर्पण के माध्यम से होता है।
5. इस स्वभाव में जीना मसीह को प्रतिबिंबित करता है। दिव्य स्वभाव में चलने वाला विश्वासी अपने चरित्र और कार्यों में मसीह को प्रतिबिंबित करने लगता है। जैक कोए के सेवकाई ने दिखाया कि दिव्य जीवन प्रत्यक्ष परिवर्तन लाता है। आपका उद्देश्य स्वाभाविक बने रहना नहीं है। आपको अलौकिक जीवन जीने के लिए बुलाया गया है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं ईश्वर के दिव्य स्वभाव का भागीदार हूँ, और उनका जीवन प्रतिदिन मुझमें कार्यरत है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे अपने दिव्य स्वभाव का भागीदार बनाने के लिए धन्यवाद। मुझे अपने भीतर के इस नए जीवन के अनुसार जीने में सहायता कीजिए। अपने स्वरूप को मेरे द्वारा प्रकट कीजिए, और मुझे पवित्रता और सामर्थ्य के मार्ग पर चलने में सक्षम बनाइए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बड़कर हैं। स्पिरिट फ्लेमस ग्लोबल"

भय और चिंता पर काबू पाना

2 तीमुथियुस 1:7

क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की आत्मा नहीं, बल्कि सामर्थ्य, प्रेम और स्वस्थ मन की आत्मा दी है।

भय और चिंता विश्वासियों के सामने आने वाली सबसे आम चुनौतियों में से कुछ हैं। ये विश्वास को कमजोर कर सकते हैं, निर्णय लेने की क्षमता को धूमिल कर सकते हैं और व्यक्ति की शांति छीन सकते हैं। हालांकि, पवित्र शास्त्र स्पष्ट करता है कि भय परमेश्वर की ओर से नहीं है। विश्वासी को पवित्र आत्मा के द्वारा शक्ति, प्रेम और स्वस्थ मन दिया गया है। भय पर विजय पाने का अर्थ समस्याओं को अनदेखा करना नहीं है, बल्कि परिस्थितियों से ऊपर परमेश्वर पर भरोसा करना और उसकी आत्मा को अपने हृदय पर शासन करने देना है।

भय और चिंता पर काबू पाने को समझना

1. भय ईश्वर से नहीं आता। भय ईश्वर के स्वभाव का हिस्सा नहीं है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "भय और विश्वास एक साथ काम नहीं कर सकते।" जब भय मन में आता है, तो विश्वास कमजोर हो जाता है। विश्वासी को भय को स्वीकार करने की नहीं, बल्कि उसका विरोध करने की वस्तु के रूप में पहचानना चाहिए।
2. पवित्र आत्मा भय पर विजय दिलाती है। परमेश्वर ने हमें शक्ति प्रदान की है। वॉचमैन नी ने इस बात पर जोर दिया कि "मनुष्य की आत्मा, जब मजबूत होती है, तो भावनात्मक अस्थिरता पर विजय प्राप्त कर सकती है।" पवित्र आत्मा आपके अंतर्मन को मजबूत करती है ताकि आप भय के वश में न रहें।
3. प्रेम भय को दूर भगाता है। सच्चा प्रेम भय को दूर भगाता है। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "जब आप ईश्वर के प्रेम से अवगत हो जाते हैं, तो भय अपना प्रभाव खोने लगता है।" भय वहीं पनपता है जहाँ प्रेम को समझा नहीं जाता। ईश्वर के प्रेम को जानने से आत्मविश्वास और शांति मिलती है।
4. मन को सतर्क रखना आवश्यक है। चिंता अक्सर अनियंत्रित विचारों से उत्पन्न होती है। चार्ल्स जी. फिन्नी ने अनुशासित चिंतन के महत्व पर बल दिया। विश्वासी को भयभीत विचारों को त्यागना और उनके स्थान पर ईश्वर के सत्य को अपनाना सीखना चाहिए।
5. ईश्वर पर भरोसा रखने से शांति मिलती है। शांति तब आती है जब चिंता की जगह भरोसा आ जाता है। जैक कोए ने कठिन परिस्थितियों में भी दृढ़ विश्वास का उदाहरण प्रस्तुत किया। ईश्वर पर भरोसा रखने से चुनौतियाँ तुरंत दूर नहीं हो जातीं, लेकिन उन चुनौतियों का आपके हृदय पर जो प्रभाव होता है, वह कम हो जाता है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं भय और चिंता को त्यागता हूँ, और मैं ईश्वर द्वारा प्रदत्त शक्ति, प्रेम और स्वस्थ मन के साथ चलता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, आपका धन्यवाद कि भय आपसे उत्पन्न नहीं होता। मुझे आप पर पूर्ण विश्वास करने और शांति से जीवन व्यतीत करने में सहायता कीजिए। मेरे हृदय से चिंता दूर कीजिए और अपने सत्य से मेरे मन को बल दीजिए। अपनी आत्मा से मुझे आत्मविश्वास और विश्राम से भर दीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

आत्मा पुरुष की अलौकिक शक्ति

इफिसियों 3:16

"ताकि वह अपनी आत्मा के द्वारा तुम्हारे भीतर तुम्हें शक्ति प्रदान करे।"

विश्वासी का उद्देश्य केवल शारीरिक शक्ति के सहारे जीना नहीं है। परमेश्वर की आत्मा के द्वारा मनुष्य की आत्मा में अलौकिक शक्ति उपलब्ध है। अनेक मसीही इसलिए संघर्ष करते हैं क्योंकि वे शारीरिक क्षमता और मानवीय तर्क पर बहुत अधिक निर्भर रहते हैं, जबकि आंतरिक शक्ति को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। जब आत्मिक शक्ति मजबूत होती है, तब विश्वासी सामर्थ्य, धीरज, अधिकार और दिव्य क्षमता के साथ जीवन व्यतीत करने लगता है।

आत्मा की अलौकिक शक्ति को समझना

1. सच्ची शक्ति का स्रोत आत्मा है। वास्तविक शक्ति भीतर से आती है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "मनुष्य की आत्मा में ईश्वर का जीवन और शक्ति निहित होती है।" जब आत्मा मजबूत होती है, तो विश्वासी दबाव में भी दृढ़ रह सकता है।
2. पवित्र आत्मा आंतरिक मनुष्य को शक्ति प्रदान करती है। पौलुस विश्वासियों के लिए प्रार्थना करता है कि उनकी आत्मा को शक्ति मिले। बॉचमैन नी ने इस बात पर जोर दिया कि "एक मजबूत आत्मा मन और शरीर को नियंत्रित कर सकती है।" यह शक्ति शारीरिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक है, जो सहनशीलता और स्थिरता प्रदान करती है।
3. ईश्वर के साथ संगति से आध्यात्मिक शक्ति का प्रवाह होता है। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "प्रार्थना से आध्यात्मिक क्षमता बढ़ती है।" जो विश्वासी ईश्वर के साथ समय बिताता है, उसमें ऐसी आंतरिक शक्ति विकसित होती है जिसे आसानी से भंग नहीं किया जा सकता।
4. आत्मिक शक्ति अलौकिक जीवन को संभव बनाती है। चार्ल्स जी. फिन्नी ने प्रदर्शित किया कि आत्मिक शक्ति वास्तविक परिस्थितियों को प्रभावित कर सकती है। जब आत्मिक शक्ति प्रबल होती है, तो विश्वासी सीमाओं से परे जाने लगता है।
5. एक सशक्त आत्मा स्थिरता और अधिकार उत्पन्न करती है। जैक कोए के सेवकाई कार्य ने दिखाया कि आध्यात्मिक शक्ति साहस और प्रभावशीलता उत्पन्न करती है। एक कमजोर आत्मा संघर्ष करती है, जबकि एक सशक्त आत्मा नेतृत्व करती है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

पवित्र आत्मा द्वारा मेरी आत्मा को शक्ति से बल मिलता है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, अपनी शक्ति से मेरे अंतर्मन को मजबूत कीजिए। मेरी सहायता कीजिए कि मैं केवल प्राकृतिक क्षमता पर ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक शक्ति पर भी निर्भर रहूँ। आपका आत्मा मुझमें कार्य करे और मुझे प्रतिदिन अलौकिक शक्ति से चलने में सक्षम बनाए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेमस ग्लोबल"

पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होना

रोमियों 8:14

"जो लोग परमेश्वर की आत्मा द्वारा निर्देशित होते हैं, वे ही परमेश्वर के बच्चे हैं।"

आध्यात्मिक परिपक्वता के सबसे स्पष्ट संकेतों में से एक पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होना है। कई विश्वासी मार्गदर्शन चाहते हैं, फिर भी वे अक्सर आत्मा के आंतरिक मार्गदर्शन को अनदेखा करते हुए बाहरी संकेतों की तलाश करते हैं। परमेश्वर अपने बच्चों को मुख्य रूप से भ्रम, दबाव या भय के माध्यम से नहीं ले जाते। वे भीतर से, मानव आत्मा के द्वारा मार्गदर्शन करते हैं। आत्मा द्वारा निर्देशित होना सीखना सही निर्णय लेने, अनावश्यक संघर्षों से बचने और परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप चलने के लिए आवश्यक है।

पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होने को समझना

1. ईश्वर अपने बच्चों का मार्गदर्शन भीतर से करते हैं। पवित्र आत्मा विश्वासी के भीतर निवास करती है और भीतर से मार्गदर्शन करती है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "आंतरिक साक्षी ही वह प्राथमिक तरीका है जिससे ईश्वर अपने बच्चों का मार्गदर्शन करते हैं।" इसका अर्थ है कि मार्गदर्शन अक्सर एक शांत ज्ञान, शांति की अनुभूति या आत्मा के भीतर एक संकेत के रूप में आता है। कई विश्वासी ईश्वर के मार्गदर्शन को समझ नहीं पाते क्योंकि वे किसी नाटकीय घटना की अपेक्षा करते हैं, जबकि ईश्वर उनके भीतर कोमल भाव से संवाद कर रहे होते हैं।
2. पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होना आध्यात्मिक परिपक्वता का संकेत है। रोमियों 8:14 दर्शाता है कि जो पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होते हैं, वे परमेश्वर की संतान हैं। बॉचमैन नी ने समझाया कि "आध्यात्मिक व्यक्ति वह है जो आत्मा के बजाय पवित्र आत्मा के नियंत्रण में रहता है।" जब पवित्र आत्मा मार्गदर्शन करता है, तो निर्णय भावनाओं, आवेग या दबाव से नहीं, बल्कि ईश्वरीय मार्गदर्शन से प्रेरित होते हैं।
3. पवित्र आत्मा शांति और दृढ़ विश्वास के माध्यम से मार्गदर्शन करती है। ईश्वर का मार्गदर्शन अक्सर शांति या आंतरिक दृढ़ विश्वास के साथ होता है। डॉ. योंगी चो ने सिखाया कि "पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन आश्वासन लाता है, भ्रम नहीं।" जब आप गलत दिशा में जा रहे होते हैं, तो पवित्र आत्मा बेचैनी या झिझक पैदा कर सकती है। इन आंतरिक संकेतों को पहचानना सही मार्गदर्शन पाने की कुंजी है।
4. आज्ञापालन से आध्यात्मिक संवेदनशीलता बढ़ती है: आप जितना अधिक पवित्र आत्मा की आज्ञा का पालन करेंगे, उसकी वाणी उतनी ही स्पष्ट होती जाएगी। चार्ल्स जी. फिज़ी ने सिखाया कि "आज्ञापालन से आध्यात्मिक स्पष्टता बढ़ती है।" जब विश्वासी बार-बार पवित्र आत्मा की अनदेखी करते हैं, तो संवेदनशीलता मंद पड़ जाती है। लेकिन जब वे शीघ्रता और ईमानदारी से प्रतिक्रिया करते हैं, तो परमेश्वर की वाणी सुनने की उनकी क्षमता में सुधार होता है।
5. संगति का जीवन मार्गदर्शन को मजबूत बनाता है। आप ईश्वर के जितने करीब होंगे, उनके मार्गदर्शन को पहचानना उतना ही आसान होगा। जैक कोए के सेवकाई ने यह दिखाया कि जो लोग ईश्वर के साथ घनिष्ठता से चलते हैं, वे अक्सर आत्मविश्वास और सटीकता के साथ आगे बढ़ते हैं। प्रार्थना, वचन और आराधना में समय बिताने से आपकी आत्मा संतुलित और ग्रहणशील बनती रहती है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं ईश्वर की आत्मा द्वारा निर्देशित हूँ, और मैं विश्वास और स्पष्टता के साथ उनके मार्गदर्शन का पालन करता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, पवित्र आत्मा के वरदान के लिए आपका धन्यवाद। मुझे उनकी राह पहचानने और विश्वासपूर्वक उनका अनुसरण करने में सहायता कीजिए। मुझे आपकी वाणी के प्रति संवेदनशील होना और प्रतिदिन आज्ञाकारिता में चलना सिखाइए। हर बात में मेरे कदमों को आप ही निर्देशित करें। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

ऊपर से प्राप्त ज्ञान

याकूब 3:17

लेकिन स्वर्ग से आने वाली बुद्धि सबसे पहले पवित्र होती है; फिर शांतिप्रिय, विचारशील, विनम्र, दया और अच्छे फलों से परिपूर्ण, निष्पक्ष और ईमानदार होती है।

मनुष्य के जीवन में दो प्रकार की बुद्धि काम करती है: सांसारिक बुद्धि और दिव्य बुद्धि। सांसारिक बुद्धि मानवीय तर्क, स्वार्थ और सीमित समझ से प्रेरित होती है। परन्तु दिव्य बुद्धि ईश्वर से आती है। यह शुद्ध, शांत और जीवन से परिपूर्ण होती है। विश्वासी को प्राकृतिक समझ के बजाय दिव्य बुद्धि पर निर्भर रहना सीखना चाहिए, क्योंकि ईश्वर मनुष्य की दृष्टि से परे देखता है।

ऊपर से प्राप्त ज्ञान को समझना

1. ईश्वरीय ज्ञान केवल ईश्वर से ही प्राप्त होता है। सच्चा ज्ञान केवल बुद्धि से उत्पन्न नहीं होता। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "ईश्वर का ज्ञान आरंभ से ही अंत को देख लेता है।" इसका अर्थ है कि ईश्वरीय ज्ञान विश्वासी को ऐसे निर्णय लेने में सक्षम बनाता है जो ईश्वर के उद्देश्य के अनुरूप हों, भले ही प्राकृतिक तर्क इसके विपरीत सुझाव दे।
2. दिव्य ज्ञान शुद्ध और शांतिपूर्ण है। याकूब ने ऊपर से आने वाले ज्ञान को शुद्ध और शांतिप्रिय बताया है। वॉचमैन नी ने समझाया कि "जो कुछ भी ईश्वर से आता है, उसमें पवित्रता और आंतरिक शांति होती है।" यदि कोई बात भ्रम, कलह या समझौता पैदा करती है, तो वह संभवतः ईश्वर से नहीं है। उनका ज्ञान स्पष्टता और शांत आश्वासन लाता है।
3. पवित्र आत्मा के माध्यम से ज्ञान प्राप्त होता है। पवित्र आत्मा दिव्य समझ का स्रोत है। डॉ. यॉंगगी चो ने सिखाया कि "आत्मा वह प्रकट करती है जो हमारी बुद्धि नहीं समझ सकती।" जब आप उस पर निर्भर रहते हैं, तो आपको ऐसी अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है जो अनुभव या शिक्षा से परे होती है।
4. विनम्रता आपको ज्ञान प्राप्त करने के योग्य बनाती है। अहंकार ज्ञान का अवरोध है। चार्ल्स जी. फिन्नी ने इस बात पर जोर दिया कि एक विनम्र हृदय सुधार और सीखने के लिए खुला रहता है। ईश्वर उन्हीं को ज्ञान प्रदान करता है जो उसके प्रति अपनी आवश्यकता को स्वीकार करने और ईमानदारी से उसका मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए तत्पर रहते हैं।
5. ईश्वरीय ज्ञान से अच्छे फल मिलते हैं। ईश्वर से प्राप्त ज्ञान सही कार्यों और अच्छे परिणामों की ओर ले जाता है। जैक कोए के उपदेशों ने दिखाया कि जब निर्णय ईश्वर द्वारा निर्देशित होते हैं, तो उनमें शक्ति और प्रभाव होता है। सच्चा ज्ञान केवल सुनने में अच्छा नहीं लगता, बल्कि यह ऐसे परिणाम देता है जो ईश्वर के स्वरूप को दर्शाते हैं।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मुझे ऊपर से ज्ञान प्राप्त होता है, और मेरे निर्णय ईश्वर की आत्मा द्वारा निर्देशित होते हैं।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, आपकी ओर से मिलने वाली बुद्धि के लिए धन्यवाद। मेरी सहायता कीजिए कि मैं अपनी समझ पर नहीं, बल्कि आपकी समझ पर भरोसा करूँ। मुझे सिखाइए कि मैं आपके मार्गदर्शन में पवित्रता, शांति और स्पष्टता के मार्ग पर चलूँ। मेरी हर निर्णय में आपकी बुद्धि का मार्गदर्शन हो। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

शरीर को क्रूस पर चढ़ाना

गलतियों 5:24

"जो लोग यीशु मसीह के हैं, उन्होंने अपनी देह को उसकी वासनाओं और इच्छाओं सहित क्रूस पर चढ़ा दिया है।"

शरीर पुरानी प्रकृति का प्रतीक है, जो पापी इच्छाओं, स्वार्थी महत्वाकांक्षाओं और ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह से प्रेरित है। पुनर्जन्म के बाद भी, विश्वासी को प्रतिदिन शरीर के प्रभाव से निपटना पड़ता है। शरीर को क्रूस पर चढ़ाना एक बार का कार्य नहीं है, बल्कि ईश्वर के प्रति निरंतर समर्पण और पापी इच्छाओं को हावी न होने देने की प्रक्रिया है। यह आध्यात्मिक विकास और आत्मा के मार्ग पर चलने के लिए आवश्यक है।

शरीर को क्रूस पर चढ़ाने को समझना

1. शरीर आत्मा का विरोध करता है। शरीर और आत्मा में परस्पर संघर्ष है। केनेथ हेगिन ने सिखाया कि "आप शरीर के अनुसार चलकर आध्यात्मिक परिणाम की अपेक्षा नहीं कर सकते।" शरीर आराम, सुख और स्वशासन चाहता है, जबकि आत्मा धार्मिकता और आज्ञाकारिता की ओर ले जाती है।
2. क्रूस पर चढ़ाया जाना स्व-इच्छा का त्याग है। शरीर को क्रूस पर चढ़ाने का अर्थ है उस पर नियंत्रण का त्याग करना। वॉचमैन नी ने समझाया कि "क्रूस पुराने मनुष्य और उसकी इच्छाओं से निपटता है।" इसका अर्थ है उन आवेगों को ना कहना जो परमेश्वर के वचन के विरुद्ध हैं, भले ही वे कितने भी प्रबल क्यों न लगें।
3. पवित्र आत्मा देह पर विजय दिलाती है। विजय केवल इच्छाशक्ति से प्राप्त नहीं होती। डॉ. योंगगी चो ने सिखाया कि "पवित्र आत्मा देह की इच्छाओं पर विजय पाने की शक्ति देती है।" जब आप पवित्र आत्मा पर भरोसा करते हैं, तो आपको प्रलोभन का विरोध करने और आज्ञाकारिता के मार्ग पर चलने की शक्ति मिलती है।
4. दैनिक अनुशासन आवश्यक है। शारीरिक वासनाओं को वश में करने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं। चार्ल्स जी. फिन्नी ने इस बात पर जोर दिया कि आध्यात्मिक अनुशासन विश्वासी के आध्यात्मिक जीवन को सुदृढ़ करता है। प्रार्थना, वचन, उपवास और आज्ञापालन शारीरिक वासनाओं को नियंत्रण में रखने में सहायक होते हैं।
5. विजय स्वतंत्रता और विकास की ओर ले जाती है। जब शरीर को वश में किया जाता है, तो आत्मा बलवान हो जाती है। जैक कोए के जीवन ने दिखाया कि समर्पण से शक्ति उत्पन्न होती है। जो विश्वासी शरीर की वासनाओं को त्याग देता है, वह अधिक स्वतंत्रता, स्पष्टता और आध्यात्मिक अधिकार का अनुभव करता है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं अपनी देह को क्रूस पर चढ़ाता हूँ और आत्मा में चलता हूँ, परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए जीवन व्यतीत करता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मेरी सहायता कीजिए कि मैं शारीरिक इच्छाओं का त्याग कर सकूँ और आपकी आत्मा के अनुसार जीवन व्यतीत करूँ। मुझे प्रलोभनों पर विजय पाने और प्रतिदिन पवित्रता के मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान कीजिए। मेरा जीवन आपके प्रति आज्ञाकारिता और समर्पण को प्रतिबिंबित करे। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"

प्रार्थनापूर्ण जीवन जीना

1 थिस्सलनीकियों 5:17

"लगातार प्रार्थना करते रहो।"

प्रार्थना विश्वासी के लिए जीवन रेखा है। प्रार्थना के द्वारा ही हम ईश्वर से संवाद करते हैं, शक्ति प्राप्त करते हैं, मार्गदर्शन पाते हैं और आध्यात्मिक शक्ति बनाए रखते हैं। प्रार्थना रहित जीवन शीघ्र ही दुर्बल, विचलित और असुरक्षित हो जाता है। परन्तु प्रार्थनामय जीवन विश्वासी को ईश्वर से जोड़े रखता है, आत्मा के प्रति संवेदनशील बनाता है और उसकी इच्छा के अनुरूप रखता है। प्रार्थना कभी-कभार नहीं, बल्कि निरंतर करनी चाहिए।

प्रार्थनापूर्ण जीवन जीना समझना

1. प्रार्थना ईश्वर के साथ आपके संबंध को मजबूत बनाती है। प्रार्थना केवल माँगना नहीं है। यह एक प्रकार की संगति है। केनेथ हेग ने सिखाया कि "एक सशक्त प्रार्थना जीवन एक सशक्त आध्यात्मिक जीवन को जन्म देता है।" प्रार्थना के बिना, ईश्वर के साथ संबंध कमजोर हो जाता है।
2. प्रार्थना से आंतरिक शक्ति बढ़ती है। प्रार्थना में बिताया गया समय आध्यात्मिक सहनशक्ति को बढ़ाता है। वॉचमैन नी ने समझाया कि "ईश्वर के साथ संवाद के माध्यम से आत्मा मजबूत होती है।" प्रार्थना करने वाला विश्वासी आध्यात्मिक रूप से स्थिर हो जाता है और आसानी से विचलित नहीं होता।
3. प्रार्थना में निरंतरता आवश्यक है। पौलुस निरंतर प्रार्थना करने का आह्वान करता है। डॉ. योंगी चो ने सिखाया कि "निरंतर प्रार्थना विश्वासी को आध्यात्मिक रूप से जीवित रखती है।" प्रार्थना केवल आपात स्थितियों तक सीमित नहीं होनी चाहिए। यह दैनिक जीवन का हिस्सा होनी चाहिए।
4. प्रार्थना ईश्वर के हस्तक्षेप को आमंत्रित करती है। ईश्वर प्रार्थना का उत्तर देते हैं। चार्ल्स जी. फिन्नी ने निरंतर प्रार्थना के कारण शक्तिशाली परिणाम देखे। प्रार्थना असंभव लगने वाली परिस्थितियों में भी ईश्वरीय हस्तक्षेप लाती है।
5. प्रार्थनापूर्ण जीवन शक्ति और घनिष्ठता उत्पन्न करता है। जैक कोए का सेवकाई कार्य प्रार्थना और ईश्वर पर निर्भरता से परिपूर्ण था। निरंतर प्रार्थना करने वाला विश्वासी ईश्वर के साथ घनिष्ठता और आध्यात्मिक अधिकार दोनों का अनुभव करता है। प्रार्थना संबंध को गहरा करती है और शक्ति प्रदान करती है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं प्रार्थनापूर्ण जीवन जीता हूँ, और प्रतिदिन ईश्वर से जुड़ा रहता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, प्रार्थना का सौभाग्य देने के लिए आपका धन्यवाद। मुझे निरंतर प्रार्थना करना और आपसे जुड़े रहना सिखाएँ। मेरी प्रार्थना को शक्ति प्रदान करें और आपके साथ मेरे संबंध को गहरा करें। मेरा जीवन आपकी आत्मा के साथ निरंतर संगति से परिपूर्ण हो। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेमस ग्लोबल"

हमारे मंत्रालय के बारे में



हमारे लोगो में बाज

स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल में, ईगल हमारे मंत्रालय के दृष्टिकोण और भविष्यसूचक अंतर्दृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है।

स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल में, हमारा मिशन परमेश्वर के राज्य को पूरी लगन और निडरता से आगे बढ़ाना और यीशु मसीह के लिए दुनिया को जीतना है। अटूट विश्वास के साथ, हम सुसमाचार की परिवर्तनकारी शक्ति से दिलों को प्रज्वलित करने का प्रयास करते हैं, व्यक्तियों को उनके ईश्वर प्रदत्त उद्देश्य पर चलने के लिए सशक्त बनाते हैं, और समुदायों को प्रेम और करुणा का पात्र बनने के लिए प्रेरित करते हैं। उत्कृष्टता की निरंतर खोज, प्रार्थनापूर्ण मध्यस्थता और सत्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के माध्यम से, हम शिष्य बनाने, जीवन को रूपांतरित करने और एक वैश्विक पुनरुत्थान लाने के लिए समर्पित हैं जो यीशु के नाम को महिमा प्रदान करता है।

हमारा उद्देश्य यीशु मसीह के प्रेम और शक्ति से पूर्णतः परिवर्तित संसार देखना है। हम ऐसे राष्ट्रों की कल्पना करते हैं जो आराधना में एकजुट हों, जहाँ प्रत्येक हृदय उनकी उपस्थिति की अग्नि से प्रज्वलित हो। रणनीतिक साझेदारियों, प्रभावशाली प्रचार-प्रसार पहलों और गतिशील शिष्यत्व कार्यक्रमों के माध्यम से, हमारा लक्ष्य निडर और उत्साही विश्वासियों की एक पीढ़ी तैयार करना है जो आशा, प्रेम और उद्धार का संदेश निडरता से पृथ्वी के कोने-कोने तक पहुँचाएँ। हम समुदायों के पुनरुद्धार, परिवारों के पुनर्स्थापन और जीवन में शाश्वत परिवर्तन की कल्पना करते हैं, क्योंकि हम यीशु मसीह के लिए विश्व को जीत रहे हैं, एक-एक आत्मा का उद्धार कर रहे हैं।



• स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल •

« अग्रदूत »

हमारा

हम स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल को दुनिया के लिए एक उज्ज्वल गवाही के रूप में देखते हैं: एक ऐसा समुदाय जिसमें चमत्कार, अद्भुत कार्य और चंगाई रोजमर्रा की संस्कृति का हिस्सा हों। ताकि मसीह का असीम प्रेम और शक्ति पृथ्वी के हर कोने में लोगों के जीवन को स्पर्श करे। जो भी हमसे मिले, वह यह जानकर जाए कि यीशु जीवित हैं, सक्रिय हैं और लौट रहे हैं। कृतज्ञता और प्रेम से भरे भाव से, हम विजेताओं से भी बढ़कर आगे बढ़ते हैं, मसीह को प्रकट करते हैं, जीवन बदलते हैं और उनके राज्य को पृथ्वी के कोने-कोने तक फैलाते हैं।

हमारा आदर्श वाक्य

कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल

हमारा विशेष

हर पल मसीह को जीना, न कि केवल रविवार को, बल्कि अपने दैनिक जीवन में उनकी उपस्थिति को समाहित करके। हम उनकी शक्ति, प्रेम और चंगाई में चलते हैं; हम विश्वास में आगे बढ़ते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि यीशु जीवित हैं। उनके साथ संबंध में, केवल नियमों से बंधे नहीं, हम एक ऐसे ईसाई धर्म को साझा करते हैं जो वास्तविक, जीवंत और परिवर्तनकारी है।

बैंक विवरण

बीएसबी: 085-928 | खाता संख्या: 50-448-4459

“सीमाओं से परे चर्च”

लोगो का विश्लेषण

गोलाकार आग

चील के चारों ओर फैली गोलाकार आग पृथ्वी का प्रतीक है, जो सेवकाई के माध्यम से ईश्वर के कार्य की विश्वव्यापी पहुंच को दर्शाती है।

ईगल

बाज भविष्यसूचक सेवकाई का एक शक्तिशाली प्रतीक है, जो दूरदृष्टि, शक्ति और दिव्य अधिकार का प्रतीक है।



Spirit Flames

लपटें

ये ज्वालाएँ ईश्वर की आत्मा का प्रतीक हैं, जो तेज़ी से जलती हुई राष्ट्रों में फैलती हैं, प्रकाश और परिवर्तन लाती हैं।

Global

"स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल" हमारे मंत्रालय का नाम है

ईगल - मंत्रालय का प्रतीक

2021 में, परमेश्वर के सेवक को सेवकाई के एक बाज की तरह ऊँची उड़ान भरने, भविष्यवाणी के क्षेत्र में और ऊँचाई पर पहुँचने और आत्मा की प्रेरणा के साथ आगे बढ़ने का एक गहरा दर्शन प्राप्त हुआ।